Scanned by TapScanner

श्री वल्लभदास भाई

रचित

श्री वल्लभवर लीला
नवरस ग्रंथ

डीजीटल संस्करण

सुरेशभाई कानाणी

संपर्क : 7878142900

श्री रमण अभिधान सुधा भाग–२

श्री वल्लभवर लीला नवरस ग्रंथ

(श्री वल्लभदास कृत)

श्री प्राणनाथो जयति

श्री वल्लभवर लीला नवरस ग्रन्थ नी पूर्व पीठिका परम भाग्यरास भाई श्री मोहन-
भाई श्री एओणे श्री स्वरूप अंगनी सेवा करी ते सुंचनका मात्र प्रथम घोलमा
लखी छे तथा परम भक्तराज स्वरूपनेष्टिक भाई श्री गोकुलभाई ए
श्री चरणार्विद्र नी सेवा कीधी ते प्रसंग विस्तारे करी लख्यो छे
तेना धोल मांगल्य धौल नव, कली सो ने बंधे जे वांध्यां छे
ते गातां सुणतां एतन मार्गी भक्त छे तेहेने रुद्रयारुढ़
थासे ए सेवानो प्रकार श्री महाप्रभुजी ए
पोतानी ईच्छा (ए) थी एहो पासे
प्रगट कराव्यो स्थित स्थित वरस दस
लगी कीधी न एणे कारणे एतन मार्गी जे कोई
श्रष्टि छे ते एणी भांते सेवा करे श्री चरणार्विद
स्थित करीने तेहोने श्री स्वरूप रसनी प्राप्ती थायज-थाय
माटे एतन मार्गी भक्ते एणी भांते श्री चरणारविंद नी सेवा भाव
सहित स्नेह सहित (रुची सहित) रुची करी सेवा करवी अने ए ग्रंथनी
एणी भांते सांभणवो, गावो जेणे करी ए वस्तु सिद्ध थाय ॥
ईति श्री वल्लभवर लीला रस ग्रन्थनी पुर्वपीठोक सम्पूर्ण ॥

श्री गोकुलेश्वर रसीक स्वरूपजी । भक्तने अर्थे प्रगट्या भुपजी ॥१॥
सदा सर्वदा ए लीला राजेजी । भक्त महीत श्री गोकुल गाजेजी ॥२॥
ए लीला छे रसरूप जी । अनुभवी जाणे ए स्वरूप जी ॥३॥
परम भक्त मोहन भाई जेहजी । श्री महाप्रभु सू छे अती घणो नेहजी ॥४॥
प्रभु विन न्यारा नव रहे क्षण यजी । स्वरूप न जाण्यु कोई ए एहतणुअजी ॥५॥
ए प्रभुने भाग्यरास जे जागेजी, जीभ एक करी केम वखाणेजी ॥६॥
प्रभुना रस माहे ए सोहागी जी, सदा रहया चरणे लागीजी ॥७॥
जहां प्रभु त्यांहां एहो छे पासे जी, एहो जाणे वाहालानो आसे जी ॥८॥
एहोने हाथे छे स्वरूप रसाल जी, वश थई रहया छे वल्लभ लाल जी ॥९॥
सेवा करी एहोणे सुख सार जी, तनुजा वित्तजा मोद अपारजी ॥१०॥
वरस लगी उपयोग आवेजी, ते सामग्री स्नेहे लावेजी ॥११॥
सदा सर्वदा वाछल्य करेयजी, वाहालाजीनु स्वरूप ते उरमां धरेजी ॥१२॥
सामग्री जे आवे उपयोग जी, भोग राग अती संयोग जी ॥१३॥
करे मनोरथ उत्सवना बहुअजी, ते अनुभवी जाणे छे सहुअजी ॥१४॥
परम रसीक गोकुलभाई भक्तजी, तेहोणे ग्रंथ कीधो अनुरक्तजी ॥१५॥
ते माहे छे अती विस्तारजी, तेथी नहेज्यो सुखनु सारजी ॥१६॥
करीये हवे बीजो प्रसंग जी, वहालाजीनी सेवा अती रस रंग जी ॥१७॥
परम भक्त गोकुल भाई एहजी, करे सेवा श्री चरणनी तेहजी ॥१८॥
एहोनी स्थितनो करु ते विचारजी, सेवाने अर्थे मोद अपारजी ॥१९॥
परम भक्त परम रस जोग्यजी, एहोनी स्थित छे प्रीय उपयोग जी ॥२०॥
ते कहु छु कांई एक आसेजी, सांभल जो भक्त ए बैठा पासजी ॥२१॥
तेमां ए अनुभवनी छे वातजी, फुल्या भक्त सहु अंगना मातजी ॥२२॥
परम भक्त गोकुल भाई दीठा जी, तेहने अती घणु लागे मीठा जी ॥२३॥
ते जाणे भाई श्रीनु रूपजी, तेहने प्रीय ए सुंदर स्वरूप जी ॥२४॥
भाई श्री उठ्या पाछली रातजी, करे ते दण्डवत भावे प्रात जी ॥२५॥
स्वरूप ते वहालानु उरमां धरेयजी, एह समयनी सुरत बहु करेयजी ॥२६॥
पछे नाहवाने वेगा आवेजी, चरणामृत लेई वाहालाने भावेजी ॥२७॥
नाहे रचीमु नीत्यनी वांणजी, तप्त जल एहोने सोहाणजी ॥२८॥
अंग अंगोछी धोती धरेयजी, ओढे उपरेणो शेष ते उपरेय जी ॥२९॥
बेसी धरे तीलक मन भायेजी, स्वेत चंदन नु एहोने सोहाय जी ॥३०॥

वेगे आवे ते मंदीर ने पासेजी, हस्त प्रक्षाली अनी पासजी ॥३१॥
तालां खोले वेगे करीयजी, आसन आगल दीवी धरीयाजी ॥३२॥
आसन तणां ते वीछोनां करेजी, साज ते सघलां आणी धरेजी ॥३३॥
दीपक ज्योती त्यांहां अती जगहलेयजी, शोभा आपी एहमां भलेजी ॥३४॥
छाणी जल भरे पात्र अपारजी, गड़आ तृष्टि कोढ़े ते वारजी ॥३५॥
पछे समेनी अपेक्षा करेयजी, जोई नक्षत्र ते वेगा करेयजी ॥३६॥
थयो अरूणोदय लह्यो ते ज्यारे जी, सेज्या पासे आव्या ते त्यारेजी ॥३७॥
जगाव्या महाप्रभु विनतां करीयजी, कह्यो प्रबोध ते रसमांहे भरीयजी ॥३८॥
करी दंडवत मुपेदी लीधीजी, श्री मुख जोई आशीष बहु दीधीजी ॥३९॥
हस्त फेरवे श्री अंग परजी, पछे पधराव्या श्री वल्लभ वरजी ॥४०॥
चोकी उपर बेठा सोहेजी, उपरणो ओढ़यो त्यांहां मन मोहेजी ॥४१॥
चोकी उठावी भाई श्री ए हाथ जी पधराव्या एम हे प्राण नाथ जी ॥४२॥
आसन उपर बेठा राजेजी, उपरेणो ओढ्यो सुन्दर छबी छाजेजी ॥४३॥
ज्यारे जेहवो ऋतु समे आवेजी, त्यारे तेहवु ओढ़ावे सोहावे जी ॥४४॥
पछेअते श्रीजी दंत धावन करेयजी, भाई श्री तष्टि गडुओ धरेयजी ॥४५॥
दंत धावन करी वेगा थाएजी, उपरणो मुख वस्त्र नो ते सोहायजी ॥४६॥
श्री मुख पूछन करीयु वेगेजी, एहोनी वाण छे नित्तने नेगजी ॥४७॥
पीढा स्थले त्यांहां गडुओ धरीयाजी, द्वार मंगल करी भाई श्री फरीयाजी ॥४८॥
पछे सेज्या मंदीरमां आवेजी, सेजा तणो ते साज उठावेजी ॥४९॥
नीज सेवक त्यांहां पोजी पोतेजी बांधी छात पीछवाई सोहातेजी ॥५०॥
द्वार उघाडी भाई श्री आव्याजी, आसन पासे उभा भाव्याजी ॥५१॥
गादी तेल वीछा वणु लाव्याजी, भाव अनेके अतीसे सोहाव्याजी ॥५२॥
वीछावी गादी पधराव्या नाथजी, भाई श्री धरे श्री चरण माथजी ॥५३॥
कंगई धरी फुलेल लगावेजो, भक्त रसीक त्यांहां नोरखवा आवेजी ॥५४॥
करे पंखो ते रूचीसु करीयजी, मुंदरी लावे उलट भरीयजी ॥५५॥
जेहवी रीतु त्यांहां तेहवु करेयजी, अंगीठी आगल लेई धरेयजी ॥५६॥
श्री अंगते लगावे तेल जी, चाले त्यांहां अती रस रेलजी ॥५७॥
एणी भांत्ये थाये तेलाभ्यंगजी, तेल सोहावे बहु श्री अंगजी ॥५८॥
ए शोभा दीठे बनी आवेजी, अनुभवी ने ए चीत्ये सुहावेजी ॥५९॥
जल समोही ने सीद्ध ते करीयाजी, हाडे भरी बहु त्यांहां धरीयाजी ॥६०॥

नाहवानी कसेडी छे अती सारजी, राखी पासे मोद अपारजी ॥६१॥
केसर रस बहु कटोरे भर्योजी, जल गुलाब सोंधो मांहे धर्योजी ॥६२॥
तेल चंबेली भेला एहजी, मुखद घणुं वाहालाने नेहजी ॥६३॥
पछे पधराव्या चोकीए नाथजी, ए समे नीरखे भक्त सहु साथजी ॥६४॥
मुके श्री मस्तके केसर रंगजी, भाई श्री चोले श्री उत्साहे अंगजी ॥६५॥
पछि नहवरावे तातां जल लेई वहुअजी, ए छवी नीरखे उभा सहुअजी ॥६६॥
केशर रंग ते फेर्यो श्री अंगजी, छवी अनुपम शोभा संगजी ॥६७॥
एणी भांत्ये वाहालोजी नाहायेजी, शोभा अद्भूत कहीय न जायेजी ॥६८॥
अंग वस्त्र लीधुं श्री हस्ते के वेगाजी, करे अंग वस्त्र श्री अंगे भेगाजी ॥६९॥
अंग वस्त्र करीने तेल लगावे जी, वात्सल अर्थे एह सोहावेजी ॥७०॥
शनी वारे नाहाये उलट भरेजी, दीवस छ ते तेलाम्भंग करेयजी ॥७१॥
कटोरी भरी चरणामृत कीधुं जी, लेता भक्तनुं कारज सीधुंजी ॥७२॥
द्वादसी अमांवश ने छठ्ठ दीन तेहजी, शनीवार आवे तो नाहे न एहजी ॥७३॥
पछे नाहे ए सोम शुभवारजी, आवे दीवस जे वारमां सारजी ॥७४॥
ओच्छव आवे विचार ना करेयजी, वार दीवस नो सोच ना धरेयजी ॥७५॥
एणी मांते विधी उर आणेजी, अभ्यंग तणां सुखने भाई श्री जाणेजी ॥७६॥
पधरावे वेग आसन ज्यांहांजी गादी सुंदर वीछावी त्यांहांजी ॥७७॥
तकीयो मोटो छोटो सोहेजी, वाहालोजी ते बैठा त्यांहां मन मोहेजी ॥७८॥
प्रथम धरावे ते धोती सारजी, ते उपर भुषण नही पारजी ॥७९॥
कुंडल मुद्रीका मोती हारजी, चोकी पदक जड़ित बहु सारजी ॥८०॥
तुलसी माला गुंजा सोहेजी, पेहेरी श्री कंठे रसीक मन मोहेजी ॥८१॥
एणी भांत्ये श्रंगार बहु करीया जी, धोती उपरेणो सोंधो भरीयोजी ॥८२॥
धरार्वा उपरणो श्रीमुख जोहेजी, एहनी पटतर ना आवे कोहेजी ॥८३॥
तिलक कर्युं केसरी रंगजी, जेहवी ऋतु ते ओढ़ावे अंगजी ॥८४॥
शीत काले फरगुल अंग धरेयजी, उष्ण काले उपरेणो सरेयजी ॥८५॥
एणी भांत्ये कीधा श्रंगारजी, ए शोभानो ना आवे पारजी ॥८६॥
गडुआ त्रष्टी ते आगल धरीयाजी, शीतल जल वहु ए करी भरीयाजी ॥८७॥
भोग समर्पे सदा तणी रीत्येजी, भाई श्री धरे छे अती घणी प्रीत्येजी ॥८८॥
द्वार मंगल करी गेथ्या घेरजी, भाई श्री आव्या उलट भेरजी ॥८९॥
गादी तकीयो वेगे बीछावेजी, उपरणो धोती त्यांहां सुहावेजी ॥९०॥

Scanned by TapScanner

बीजा साज अनेक ते धरीयाजी, ऋतु ऋतु समेना आनंद भरीयाजी ।।९१।।
मुख वस्त्र उपरणो धर्यो ते सारजी, तकीया उपर शोभा अपारजी ।।९२।।
सोहे साज ते तकीया तणोयजी, धर्यो सर्व ते उलट घणोजी ।।९३।।
खांडी बीडी ते रस रूपजी, द्वार उघाडीने जोया भुपजी ।।९४।।
भोग सराव्यो ते वेगे फरीयजी, आचमनने त्यां तष्टी धरीयजी ।।९५।।
आचमन करवा गडुओ संगजी, करावे आचमन उपज्यो रंगजी ।।९६।।
धर्यो उपरणो मुख वस्त्र तणोयजी, भाई श्री ते उछाहा घणोअजी ।।९७।।
मुके फरी ते तकीया परेयजी, बीडी आरो गावे छे आनंद भरेयजी ।।९८।।
कपुरदानी चुनेटी धरेयजी, वाहालोजी आरोगे छे नीज करेयजी ।।९९।।
भाई श्री राखे मांखी पासजी, एह समे नीरखे वल्लभ दास जी ।।१००।।

।। इति श्री प्रथम मांगल्य सम्पूर्ण ।।

मांगल्य बीजु

परम रसीक वल्लभ वर राजेजी, आसन उपर बैठा गाजेजी ।।१।।
श्रृंगार धोती उपरणो सोहेजी, श्री मुख जोई रसीक जन मोहेजी ।।२।।
ए समे शोभा नौतन रंगजी, छबी प्रगटी ए समे श्री अंगजी ।।३।।
भाई श्री करे सेवाना काजजी, श्रंगार समे बेठा महाराज जी ।।४।।
मिश्रि धरी बंटाए सारजी, ते आरोगे छे प्राण आधार जी ।।५।।
अगर उखेवी द्वार उघाडेजी, भक्त ने मुख दरस पमाडेजी ।।६।।
ते समे गाए व्रंदावन दास जी, बलरामजी नो पोती आसजो ।।७।।
खोले द्वार आनन्द ते गाअेजी, श्री मुख शोभा जोई उर लायेजी ।।८।।
ए समेनां पद छे अनेकजो, गाए लडावे करी ते विवेकजी ।।९।।
पछे बेसीने कीर्तन करेयजो, समे समेनां मोद धरेयजी ।।१०।।
पछे ते भाई श्री सेज्या घेरजी, आवी बेठा माहा सुख भरेयजी ।।११।।
सेज्या भोंमी बीछावी वेगेजी, त्यांहांना साज धर्या सहु नेगजी ।।१२।।
वस्त्र समारे बंटा तणांयजी, काज करी राखे अती घणांयजी ।।१३।।
पछें बेसी लीखन चीत्त धरेयजी, महा श्री उत्सवना उलट भरेयजी ।।१४।।
आठो पोहोर रहे एह विचार जी, माहा श्री उत्सव छे मुख सारजी ।।१५।।
भाई श्री फुल्या अंग ना मायेजी, राजभोग धरवा वेगा थायेजी ।।१६।।
भोजन करवा समे थयो ज्यारेजी, गडुआ फरीने जल भर्यो त्यारेजी ।।१७।।
मीश्री प्रसादी बीडो उठावेजी, छोटो तकीयो न्यारो लावेजो ।।१८।।
मुख वस्त्र नो उपरणो पासजी, फरगुल न्यारी करी हुल्लासेजी ।।१९।।

आसन आगल चोको देईयजी, पडघी चार मुके त्यांहां लेईयजी ॥२०॥
पछे कमाड मांगल्य करे पोते जी, केहेडे उपरेणो बांध्यो सोहाते जी ॥२१॥
सीत काले पामरी ओढ़ावे जी, त्यारी धरी ते भावेजी ॥२२॥
उष्ण काले पंखा करेयजी, जेहवो समय तेहवा सहु धरेयजी ॥२३॥
पछें आवे रसोईं घर मांहांजी, पाक थाय छे आव्या त्यांहां जी ॥२४॥
हस्त पखाली वेगा थायेजी, आनंद प्रगट्यो ते ना समायजी ॥२५॥
रस भक्ते रसोई सीद्ध करीयजी, थालों मांहे सामग्री धरीयजी ॥२६॥
ते थालो सहु भाई श्री लावेजी, धरे पडधीये अती मन भावेजी ॥२७॥
प्रथम थाल आणी धरेजी, भात मूंग घृत भरेयजी ॥२८॥
भर्यो कटोरो कढ़ीये वेगजी, मीरचनी बुकनी ते मांहे भेगजी ॥२९॥
चमचो मुक्यो कटोरा संगजी, मुख्य थाल मुकी मन रंगजी ॥३०॥
बीजी थाले जमणी पासजी, ते मांहे रोटी खीर सुख रासजी ॥३१॥
बीजी सामग्री नाना भांत्यजी, ए मांहे मुकी करी बहु खांत्यजी ॥३२॥
त्रीजी थाली डावी जम राखी जी, भक्त एक त्यांहे राखे माखीजी ॥३३॥
थाल ए माहां कटोरा बहुअजी, शाक सीखरन दही भर्या सहु अजी ॥३४॥
जीरू लोंन बुकनी सारजी, मीठाई रूचीत प्राण आधारजी ॥३५॥
भोग समर्प्यो स्नेहे माहा भरेयजी, भोगता ए वल्लभ वरेयजी ॥३६॥
हेम रजतना कटोरा सोहेजी, थालो सुंदर देखी मन मोहेजी ॥३७॥
ते मांहां भोजन करे छे नाथजी, सामग्री आरोगे नीज हाथजी ॥३८॥
ए में लख्युं सुचनका मातजी, सामग्री छे भरी बहु पातजी ॥३९॥
एणी भांते भोजन नी वीधजी, उभी त्यां छे रिद्ध ने सिद्धजी ॥४०॥
ए भांते वाहालो करे भोजनजी, कमाड मांगल्य कर्या प्रफुल्लित मनजी ॥४१॥
सेज्या मंदीर मांहां बेठा आवीजी, लिखन करे छे उच्छवनां भावीजी ॥४२॥
घडी चार लगी एमज वीतेजी, माहा उच्छवसु अती घणी प्रीतेजी ॥४३॥
रस भक्त बीडी खाडी राखेजी, समे थयो छे एहवां दाखेजी ॥४४॥
भाई श्री उठया सुणतां मातजी, जल सिद्ध कीधां भरी बहु पात्र जी ॥४५॥
उघाडी द्वार त्यांहां आव्या पासेजी, जल पाननो गडुओ उठाव्यो दासेजी ॥४६॥
पछे उठाव्यो सघलो साजजी, ए सने नीरख्या श्री महाराज जी ॥४७॥
रस भक्त आर्वा सरावे भोगजी, एहो तणा भाव वाहाला संजोगजी ॥४८॥
पडघी उठावी चोको देईयजी, रस भक्त करे छे ए सहु लेइजी ॥४९॥

आचमन करावे भाई श्री वेगेजी, धरे उपरेणो नीत्तने नेगजी ॥५०॥
आरोगावे बीडी चुनो संगजी, कपुर आरोगे महारस रंगजी ॥५१॥
छोटो तकीयो मुक्यो पासजी, धरे उपरेणो रसनी रासेजी ॥५२॥
जल पाननो गडुओ भरी त्यांहां लाव्याजी, तष्टी गडुओ संग मोह्राव्याजी ॥५३॥
पोहोपहार श्री कंठे धरावेजी, हररांम वोहोरो अती सुख पावेजी ॥५४॥
फुलनी सेवा नित नित करेजी, वाहालाजी ना भाव उरमांहां धरेजी ॥५५॥
अगर उखेंवी उघाड़यां द्वारजी, वीडां पासे धरीयां सारजी ॥५६॥
भगवदी सहु त्यांहां दरसन करेयजी, छवी वाहालानी उरमां धरेयजी ॥५७॥
भाई लगावे सोंधो सारजी, गुलाब जल छीरके तेणी वारजी ॥५८॥
ए सहु उष्ण काल लही करेयजी, सीत काले ते अंगोठी धरेयजी ॥५९॥
कीर्तनीया त्यांहां कीर्तन करेयजी, मनमुख उभा सुखमां लरेयजी ॥६०॥
भोजन समेनां गाये गीतजी, सहुको ने उप जावे प्रीतजी ॥६१॥
ए समेनां सुख वयांहां लगी कहीयेजी, अनुभव आणी मनमांहां लहीयेजी ॥६२॥
एम करतां समो लहयो ते ज्यारेजी, द्वार मांगल्य कर्या वेगे त्यारेजी ॥६३॥
आरोगावे वीडी नित्य रीतेजी, समे जोई करे अती घणी प्रीतेजी ॥६४॥
सेज समारो धरीयो साज जी, सेजे पधराव्या श्री महाराज जी ॥६५॥
भावे करीयने त्यांहां पधरावे जी, इच्छा सहीत वाहालोजी आवेजी ॥६६॥
फुलहार दर्पण संग धरेयजी, वीडां बहुअ गडुए जल भरयेजी ॥६७॥
तष्टो चरण वस्त्र धरे पासजी, ए सुख जोई पोहोती आसजी ॥६८॥
पोढे माहा प्रभु भोंम सेज्या ए जी, ईच्छाये पोताने चित्त भावेजी ॥६९॥
ए समेनां काज सहु करीया जी, द्वार मांगल्य करी तालां भरीयाजी ॥७०॥
पछें आव्या भाई श्री घेरजी, बेठा साथसुं उलट भेरजी ॥७१॥
प्रसाद लेईयन करे विश्राम जी, उठे वेगा सुखनुं धामजी ॥७२॥
माहा उच्छव नो लखे प्रसंग जी, ए उतसवे भर्या बहु रंगजी ॥७३॥
उत्थापन समे थयो ज्यारे जी, भक्ते द्वार उघाडयां त्यारेजी ॥७४॥
कर्युं उत्थापन नीत्यनी रीतेजी, जल पान गडुओ भर्यो बहु प्रीतेजी ॥७५॥
खांडी बीडी समर्पे भावेजी, कपुर संग चुनोटी लावेजी ॥७६॥
मीठाई धरे त्यांहां बंटो भरीयजी, वाहालो आरोगे अती रूचि करीयजी ॥७७॥
एणी भांते उत्थापन करेयजी, संध्या लगी बीडी बहु धरेयजी ॥७८॥
उत्थापन ने समे त्यांहां अव्याजी, भाई श्री नीरखे श्रीमुख भाव्याजी ॥७९॥

नीरखे सहु को श्री वल्लभ राजजी ॥८०॥
बेठा छे त्यां छे संग समाज जी, रीझे माहा प्रभु मुखनु निधान जो ॥८१॥
गाये गुणीजन राग बंधान जी, कृपा प्रभुनी छे निपटते जी ॥८२॥
परम भक्त दामोदर भटट एजी, कहेवाने अती हुल्लास जी ॥८३॥
एहो आवी बैठा त्यांहां पासजी, वचन श्री मुखनों सुरत छे घणोयजी ॥८४॥
कहे वारता श्रीमुख तणीयजी, श्रीजीये कीधा ते सहु लहीयजी ॥८५॥
सात ग्रन्थनी टीका कहेयजी, साभली भाव उर मांहां लावेजी ॥८६॥
एणे समे सहु एक भावेजी, तेज भावे भजे श्री चर्ण जी ॥८७॥
जेहोनो जेहवो कीधो वर्ण जी, सांभलता होय अती घणी प्रीत जी ॥८८॥
एणी भांते कथा नित्य रीत जी, ठोर ठोर मंदीर मांहां करायजी ॥८९॥
दीपक दीवीये त्यांहां धरायेजी, भाई श्री उठया वेगे त्यारेजी ॥९०॥
थयो समे संध्यान्यो ज्यारेजी, नमन करे श्री चरणे भावेजी ॥९१॥
सुख सु नाही भीतर आवेजी, गडुओ भरे फरी नीत्यनी रीत्येजी ॥९२॥
भुषण वडां करे सहु प्रीत्येजी, थाल मांहां भरी बहु संयोग जी ॥९३॥
द्वार मांगल्य करी लावे भोगजी, मेवो सुको नीलो सुहाई जी ॥९४॥
मुख्य थाले पकवान मिठाई जी, धरे लोंन पासे सुहातु जी ॥९५॥
बीजी थाल मांहां सुरण तातुजी, ते मांहा दुध तातो बहु करेयजी ॥९६॥
त्रीजी थाल मांहां कटोरो धरेयजी, ते आरोगे छे मारो धणीयजी ॥९७॥
मिश्री मुके एहमां घणीयजी, एणी पेरे समर्पे त्यांहां जी ॥९८॥
कटोरा चमचा मुके मांहां जी, वल्लभ दास प्रभु आरोगे प्रीत्येजी ॥९९॥
भोग समर्प्यो ए रीतेजी,

॥ ईति श्री बीजु मांगल्य संपुर्णम् ॥

॥ मांगल्य त्रीजु ॥

ी गोकुलेशो जयति ॥ हवे मांगल्य त्रीजु लखीये छीअे ॥ ए गावानी जात्य ॥
वेणा भट तणो एणी भांत्ये गवासे—

माहा आनंद परमानन्द जी । श्री वल्लभ रस वस कंहजी ॥१॥
बेठा आसन आरोगे भोगजी । ए भोगता रस संयोगजी ॥२॥
द्वार मांगल्य करी सेज्या घेरजी । भाई श्री आवे उलट भेरजी ॥३॥
गादी तकीयो उठाव्यो ज्योरेजी । सुख सेज्या वीछावी त्यारेजी ॥४॥

सुफेदी कसणेय ते कसीयजी । पलंग पोष चादर सोमा वसीयजी ॥५॥
सहराणां गोरदा धर्या पासजी । सोंधा तेल लगाव्यो हुल्लासे जी ॥६॥
सुपेदी चादर समे जोई जी । धरे तेहवु जेहवी रितु होई जी ॥७॥
मोटी छोटी चोंकी त्यांहां धरेजी । चरण वस्त्र गडुआ जल भरेयजी ॥८॥
तष्टी आदे सामग्री सहु अजी । सेज्या समेनो मनोरथ बहुअजी ॥९॥
पछे आवी उघाडे द्वार जी । सरावे भोग ते एणी वारजी ॥१०॥
पडधी उठावी चोकी देईयजी । आचमन करे गडुओ लेईयजो ॥११॥
मुख वस्त्र धरे ते सारजी । तेणे समे होये मोद अपारजी ॥१२॥
भक्त रसीक त्यांहां वीडी खडे जी । एहोनी समता कोई न मोडेजी ॥१३॥
वीडी आरोगावे वेगजो । कपुर दानी चुनेंटी नेग जी ॥१४॥
एम करता उघाड़या द्वारजी । सहु नीरखे सुंदर वर सारजी ॥१५॥
कीर्तनीया त्यांहां बेठा आवीजी । जस गाये वाहालाजी नो भावीजी ॥१६॥
दास वृंदावन बलीराम जी । मोरली गोपी गाय अभी रामजी ॥१७॥
राम दास नरोत्तम छोटाजी । चतुरदास सारंगीये मोटाजी ॥१८॥
एणी मांते कीर्तनीया बहुअजी । लाला चर्तुरभुज आदे सहु अजी ॥१९॥
एणी भांते घडी चार वीतेजी । वीडी चार आरोगे प्रीते जी ॥२०॥
तेल सेज्यानो समे थयो ज्योरेजी । वेग करीय लहयो छे त्यारेजी ॥२१॥
तेल सेज्योनो सुख जे जाणे जी । एक जीभ्या ए केम वखाणे जी ॥२२॥
एणी भांते रोते रस मांहांजी । भाई श्री करे अनुभव त्यांहां जी ॥२३॥
पछे अनुभवी नो सुख सारजी । लहे सो सुणता रस ए अपारजी ॥२४॥
वीडां एकबीस तणो छे नेगजी । पोढ़ता लगी समर्पे भेगजी ॥२५॥
उठावे गडुआ समे थाय ज्यारेजी । फरी जल भरे रूची त्यारेजी ॥२६॥
ते मुके चोकी छे ज्यां होयजी, तष्टी गडुओ आदि अे त्यांहांजी ॥२७॥
मुख वस्त्र उपरणो जेहजी, फुलमाल सेज्या ए तेहजी ॥२८॥
कपुरदानी चुनेटी लईजी, धरे चोकी आदे देईजी ॥२९॥
छोटी चोकी ते लीधी हाथ जी, पधराव्या श्री प्राणनाथजी ॥३०॥
राखी आणी आसन पास जी, उभा नीरखे छे त्यांहां दास जी ॥३१॥
द्वार मांगल्य करीने आवे जी, भाई श्री उभा एक भावेजी ॥३२॥
दंडवत संग वीनती करीयजी, आसन त्यांहां चोकी धरीयजी ॥३३॥
पधराव्या ए मारो नाथजी, धोती मरगजी लीधी हाथ जी ॥३४॥

उपरणो श्रीकंठे धर्योयजी, स्वेत सुन्दर सोंधे भर्योयजी ॥३५॥
उठावी चोकी अती हुल्लासे जी, प्रभु पधराव्या सेज्या पासेजी ॥३६॥
ज्योती दीवानी त्यांहां जल हलेयजी ।प्रीया अंगनी ज्योत मां भक्तयजी ॥३७॥
सेज्या उपर प्रभु पधराव्याजी । तनीयो पेहेरे सोहाव्याजी ॥३८॥
श्री चरणे चोकी त्यांहां धरीयजी । वाहालोजी बेठा परवरीयजी ॥३९॥
श्वेत आण्यो मुड़ बंधो सारजी । धराव्यो जीवन आधारजी ॥४०॥
सोंधे सुवासे अतीए सण्योजी । बांध्यो श्री मस्तके अती बण्योजी ॥४१॥
दरिआई पीतरंग झलकेजी । ते जोई रसीक चीत्त ठलकेजी ॥४२॥
एणी भांते बैठा माहाराज जी । दरसन करे सहुअ समाज जी ॥४३॥
पछे समर्पे बीडु फरीयजी। कपुरदानी चुनेटी धरीयजी ॥॥४४॥
लाव्या तष्टी गडुओ तेम लेयर्जा । त्यांहां वाहालो श्री हस्त वीच लेयजी ॥४५॥
ए समे अनुभवी ने छे ज्ञात जी । खोली लीखने कहीय ना जात जी ॥४६॥
मुख वस्त्र नो उपरेणो धरेयजी । वाहालाजी ए ग्रहयो श्री करेयजी ॥४७॥
श्री मुख पुछे छबी न्यारी जी ।जुओ उभा सुन्दरी सकुमारी जी ॥४८॥
भक्त रसीक त्यांहां पंखो करेयजी । ग्रीष्म उलट भरेयजी ॥४९॥
शीत कालमां अंगीठी सारजी । तेह करे जे रूचे आधारजी ॥५०॥
मुख सेज्यानु सुख छे बहु अजी । भक्त रसिक ए जाणे सहुअजी ॥५१॥
भाई श्रीयते भाव सदायजी । एणे भावे रहे प्रेम दायजी ॥५२॥
भाव सहीत पोढ़या नाथ जी । श्री चरणे त्यांहां नाम्यु माथ जी ॥५३॥
सुपेदी चादर जेहवो समेयजी । ओढाडे तेहवु जेह गमेयजी ॥५४॥
वाच्छल्य कीधां एणी भांत्येजी । दाख धरी बीडी वे खांते जी ॥५५॥
सेज्या समे भोग रस रूपजी । भोगता श्री गोकुलेश स्वरूप जी ॥५६॥।
वीती रात पोहोर त्यां एकजी । भाई श्री करे सेवा विवेकजी ॥५७॥
करे विनती धरे मन आसजी । वेगे उठीये अती हुल्लासे जी ॥५८॥
दीजे दरसन भक्तने दांन जी । वेगा उठीये सुखनु निधान जी ॥५९॥
एणी भांते मनोरथ करीयाजी । वाहालाजी मु अती रस भरीयाजी ॥६०॥
भक्त ना मनोरथ बहु करेयजी । रस वस वाहालो उर धरेयजी ॥६१॥
सदा सर्वदां एणी रीतेजी । भाई श्री करे वाहालासु प्रीतेजी ॥६२॥
ए सहु एक दीवसनु कहीयेजी । बारह मास एणी पेरे लहीयेजी ॥६३॥
भाई श्री आवी बेसे धामजी । पोतानु जहां छे अभीरामजी ॥६४॥

तहां भगवदी धोल बहु गायेजी । भाई श्री ने सदा सोहायेजी ॥६५॥
वैष्णव वल्या देई आसीस जी । चीरंजीवो ए श्री गोकुलेश जी ॥६६॥
भाई श्री बेठा लीखन त्यांहां करेयजी । माहा उच्छव उलट भरेयजी ॥६७॥
लखतां लखतां वीते रात जी । भाई श्री फुल्या अंग ना मात जी ॥६८॥
एणी भांते विते ए दीन जी । एहोनु सदा ए रस मांहां मन्नजी ॥६९॥
एम मास अगीयार ते वित्याजी । जाण्या ए प्रभु ते घणु जीत्याजी ॥७०॥
एम करतां श्री उत्सव आव्योजी । भक्त सहु ने अती भाव्योजी ॥७१॥
हवे लखसुं उत्सव नी रीत जी । भाई श्री करे अती घणी प्रीतजी ॥७२॥
प्रथम करे ते भूषण साजजी । वस्त्र वागा करे प्रभु काज जी ॥७३॥
सामग्री अनेक बहु भांत्येजी । सिद्ध करीयां मननी खांत्येजी ॥७४॥
कार्तिक सुदी सातेम आवीजी । आरम्भ माहा उच्छव नो भावीजी ॥७५॥
घेर घेर मंगल ते थायेजी । भाई श्री फुल्या अंग ना मायेजी ॥७६॥
आव्या न्हाई नीत्य तणी बांणजी । करे काज ते एहोने सोहाग जी ॥७७॥
नीत्य चरीत्रमां लख्यु छे जेहजी । तेणी पेरे करे सहु तेहजी ॥७८॥
रात पाछली मंगल रूपजी । जगाव्या सुन्दर ए स्वरूप जी ॥७९॥
सुंदरी त्यांहां मंगल करेयजी । साथीया तोरण मन हरेयजी ॥८०॥
माहा उच्छव नां गाये गीतजी । कीर्तनीया ते करी बहु प्रीतजी ॥८१॥
आसने वाहालाजी ने पधराव्याजी । नित्य चरीत्र करे सोहाव्याजी ॥८२॥
लगावी तेल नहेवरावेजी । केसर नाहतां सुख पावेजी ॥८३॥
अंग अंगोछी तेल ते करीयजी । धोती नौतन छीरकी धरेयजी ॥८४॥
भुषण संग तुलसी मालांजी । केशर तीलक कयुं शुभ भालेजी ॥८५॥
एणी भांते शृगार ते करीयाजी । धोती उपरणो सोंधे भरीयांजी ॥८६॥
फरगुल ओठोवी ते रंगजी । धर्या शृगार सामग्री संगजी ॥८७॥
भोग सरावी उघाडया द्वारजी । गाये कीर्तनीया उचारजी ॥८८॥
प्रागट समेनां पद गायेजी । ताल परवावज ए बजवायेजी ॥८९॥
भोजन करी पोहोचे नाथजी । पोढ़ी उठे ते जुअे साथजी ॥९०॥
संध्या समे उच्छव नां गीतजी । सुन्दरी गाये छे बहु प्रीतेजी ॥९१॥
माहा प्रभु पोढ़्या सुख सेजजी । ए समे तणां सुख मांहां हेजजी ॥९२॥
एह चरीत्र मां लख्यु छे एहजी । वीस्तारे सुं लहेज्यो तेहजी ॥९३॥
पाछली उठे नाथजी । नीरखे आवी भक्त ते साथ जी । ९४ ।

एणी पेरे मास एक करेयजी । मागसिर सुदी मांहां रस भरेयजी ॥९५॥
प्रथम पडवानो दिन जी । सुदी बीज नु भाग छे धन्यजी ॥९६॥
दीवसे नाहाये वाहालो वेग जी । बाजोठीया बेसे ए नेगजी ॥९७॥
दीवसे छे भक्तना वाराजी । पंचमी लगी करे एक धाराजी ॥९८॥
ए उच्छव माहा अती अहल्लाद जी । भगवदी लेवरावे प्रसाद जी ॥९९॥
भाई श्री करे उछव रंगेजी । वल्लभ दास एहोने संगेजी ॥१००॥

॥ इति श्री त्रीजु मांगल्य संपुर्णम् ॥

॥ मांगल्य चोथु ॥

ल्लभ वर सुख दाता जयति ॥ हवे मांगल्य चोथु लखीये छीअे ॥ ए गा
करुणा ते करीने पौधार्याजी ॥ ए राग ॥

माहा श्री उत्सव आप्योजी । फुल्या श्री वल्लभ माहाराज जी ॥१॥
फुल्या मोहनभाई श्री अंगजी । गोकुल भाई फुल्या रंगजी ॥२॥
मांगल्य सुद छठ्ठ आव्यो दिन जी । आज अमारा भाग्य छे धन्यजी ॥३॥
परम रसीक मोहन भाई भक्तजी । एह दीवसमां अनुरक्त जी ॥४॥
मोहन भाई ए माग्यो तेहजी । प्रभुजी ए आप्या उत्सव एहजी ॥५॥
छठ्ठ नो उत्सव पोते आव्योजी । ए उत्सव एहोनो करी थाप्योजी ॥६॥
ए उत्सव छे अती अनुरागी जी । छठ्ठ ए सप्तमी संग रस पागी जी ॥७॥
करे हवडां गोकुल भाई तेमय जी । छठ्ठ नो दीवस रसालो एमयजी ॥८॥
नहेवराव्या प्रभु केसर रंगजी । धोती उपरणो धराव्यो श्री अंगजी ॥९॥
विविध प्रकारे श्रंगार ते करीयांजी । उत्सव तणा मनोरथ सरीयाजी ॥१०॥
राजभोग धरे विविध प्रकारेजी । सखडी सामग्री जलेबी त्यारेजी ॥११॥
आणी भोग अनेक ते धरीयांजी । माहा उच्छव आनंद भरीयांजी ॥१२॥
एणे दीवसे सामग्री बहुयजी । वाहालोजी आरोगे हीत करी सहुयजी ॥१३॥
एम करतां एक पोहोर ते थायेजी । भाई श्री भोग सरावा जायेजी ॥१४॥
भोग सरावी आचमन करीयांजी । बीडां टोकरे बहु धरीयांजी ॥१५॥
एणे समे कर्या नित्य ना नेगजी । द्वार उघाडे भाई श्री वेग जी ॥१६॥
एहो समे वाजित्र सहु वाजे जी । आनंदे श्री गोकुल गाजे जी ॥१७॥
गाये कीर्तनीया मली समाज जी । वाजां वाये ताल पखाजजी ॥१८॥
एणे समे उमंग्यो रस चारजी । आसन बेठा प्राण आधार जी ॥१९॥
उछव थाये छे छठ्ठ तणोयजी । भाई श्री ने मनोरथ घणोयजी ॥२०॥

द्वार माडी पोढाडया नाथजी । नोहोतर्या वेग करो साथ जी ॥२१॥
नाही आवे ते मलीय समाज जी । स्त्री जन पुरुष उछव लही आजजी ॥२२॥
समाधान बहु एहोनां करीयांजी । पधरावी वस्त्र फुलेल ते धरीयांजी ॥२३॥
तीलक धरी ने तुलसी मालजी । पेहेरावी छे भक्त रसालजी ॥२४॥
सहु कोने बेसाडया प्रीतजी । परोसे सुन्दरी वात्सल रीतेजी ॥२५॥
माहा प्रसाद ले सघलो साथजी । सुंदरी आवे लडावी नाथजी ॥२६॥
ले प्रसाद भक्त सहु ते वलीयांजी । बीडां आपे माहाफल फलीयांजी ॥२८॥
एणी भांते उछव ए थायेजी । आनंद उमडया अंग न मायेजी ॥२८॥
भाई श्री आवी मंदीर माहाजी । केसर रस काढ्यो बहु त्यांहांजी ॥२९॥
पाघ धोती उरेपणो सारजी । केसरे रंग्या सोभा अपारजी ॥३०॥
चुणी सभारी राख्यां तेहजी । सोंधे भर्या सुवासीत एहजी ॥३१॥
भुषण वस्त्र कभाये रंगजी । फरगुल साज धर्यो बहु संगजी ॥३२॥
एणी भांते उछव नो साज जी। सिध्य करी राख्यो छे सहु आज ॥३३॥
समो लही उत्थापन करेयजी। जल पान गडुओ आगल धरेयजी ॥३४॥
बीडां समर्पी उधाडे द्वारजी । निरखे श्री मुख नर ने नारजी ॥३५॥
एणे समे कीर्तनीया गायेजी । माहा उछव ना समे सोहेजी ॥३६॥
वाजां वाजे माहा घन घोरजी । उठे नगारानी त्यांहां घोरजी ॥३७॥
संध्या समे थयो छे उछाहेयजी । दीपक धरीया भक्त उमाहेजी ॥३८॥
एम करतां सहु वैश्नव साथजी । आनंद भर्या निरखे छे नाथ जी ॥३९॥
रात्र घडी वे त्रण जावेजी । भाईजी समाज सहीत उमाहा गावेजी ॥४०॥
प्रसाद लेवा बेठा वेगजी। सुजाती साथ त्यांहां सहु भेगजी ॥४१॥
उपरणा धोती धराव्या तेहजी । तुलसी माल पहेरावी स्नेहजी ॥४२॥
तिलक करी कीधां सनमांन जी। भक्त करे ए रसनुं पांनजी ॥४२॥
पातलो मुकी परोसे सहुयजी । पकवांन जलेबी बहुयजी ॥४४॥
उछाह सहीत प्रसाद ते लीधोजी। भाई नो मनोरथ ए सीधोजी ॥४५॥
बीडां आपी कहीओ पेरजी । तमो आवजो सदा ए घेरजी ॥४६॥
ए उछव छे तमारो आजजी । आवजो वेगे सहुअ समाज जी ॥४७॥
पछें बेसी सहु स्त्री जन लेयजी। माहा प्रसाद लेतां सुख देयजी ॥४८॥
एणे समे गाये सहु धोलजी। थाये सुख माहा रंगना रोल जी ॥४९॥
परोसाय जल पाये सहु ने त्यांरेजी । सहु कोई लेई रहया छे ज्यारेजी ॥५०॥

दे आशीस उछाहा भरीयांजी । प्राणी मात्र ना मनोरथ सरीयांजी ॥५१॥
एम करतां वीती मध्य रातजी । आनन्द प्रगटयो अंग न मायजी ॥५२॥
एणी भांते पोहोती छे आसजी । छठठने दीवसे अती हुल्लासजी ॥५॥
ए लध्यु सुचनका मात्रजी लेहेशे स्वकीय जे रसनां पात्रजी ॥५४॥
पछे भाई श्री नाही न्यांरां आव्याजी । माहा प्रभु पासे उभा भाव्याजी ॥५५॥
एत्र घणी एम वीती ज्यारे जी । प्रभु पधराव्या सेजे त्यारे जी ॥५६॥
पोढाडी सहु साज ते धरियाजी । कमाड मांगल्य करीने परवरीयाजी ॥५७॥
निज मंदिर मां आवी बैठाजी । उछव तणा भाव उर पैठाजी ॥५८॥
माहा मन्दिर पोती सीद्ध कीधाजी । त्यांहाना वस्त्र ते वांधी लीधांजी ॥५९॥
जरी छात पीछवाई जरीयजी । सघलो साज बांध्या छे भरीयजी ॥६०॥
तकीयो छोटो मोटो ते सोहेजी । जरी साज ते उपर मोहेजी ॥६१॥
लटकणु जरी त्यांहां ए ललके जी । सोनेरी झालर सुन्दर चलेकजी ॥६२॥
आसन गादी बीछाव्यां चीरजी । ए जोई न रहे कोई ने धीरजी ॥६३॥
ए शोभा दीठे बनी आवेजी । बाहालाजी ने उपयोग आवेजी ॥६४॥
ने जोवानी मनमांहां आसजी । प्रागट समेनो अती हुल्लासजी ॥६५॥
आसन तले चोक त्यांहां पुर्योजी । सुन्दरी तणा भाव छे सुराजी ॥६६॥
दीपक जोति चहु ओर ते झलकेजी । आसन तणी शोभा अती चलकेजो ॥६७॥
सघले द्वारे तेल लगाव्यां । भाव रसाले सुन्दरी आव्यांजी ॥६८॥
पुर्या चोक मोतीये सारजी । चित्र विचित्र कर्यो तेणी वारजी ॥६९॥
हाथा दीधां कुंम कुंम भरीयजी । हवारे मंगल शोभा हणोदजी ॥७०॥
तोरण बांध्या द्वारे सोहेजी । कदलीं खंभ उभा मन मोहेजी ॥७१॥
कंकु तणा छडा त्याहा दीधाजी । कर्या मांगल्य बहु मनोरथ सीधोजी ॥७३॥
एम करतां रात्र पहोरजी रहीय जी । भाई श्री उठया समे शुभ लंहीजी॥७३॥
वेगा वेगा नाहीने आवेजी । धोती उपरेणा तीलक सुहावेजी ॥७४॥
आवी उभा मंदीरने पासेजी । मनमां माहा उछवनी आसेजी ॥७५॥
साथ सहु कोई नाही आव्योजी । वस्त्र भुषण पेहरे सोहाव्योजी ॥७५॥
तीलक कर्या कुम कुम नां भाले जी । प्रागट लही श्री रुक्मणीलाल जी ॥७७॥
दीपक धरिया ठामे ठामजी । श्री मंदिर छे माहा अभीरामजी ॥७८॥
भाई श्री नौतन गादी लाव्याजी । वस्त्र दुलीचा संग सोहाव्याजी ॥७९॥
आसन पासे बीछाव्या 'गहजी । वस्त्र श्वेत गादी पर गेहरी ॥८०॥

कगई धरी मोटी यांहां पासेजी । तेल कटोरा भर्यां हुल्लागेजी ॥८१॥
तेल तणां कहु घु हु नामजी । भरी राख्यां गादी ने ठामजी ॥८२॥
बेल चमेली केवडेल वासजी । केसर कस्तुरी रस रासजी ॥८३॥
गुलाब चम्पा केतुकी जेहजी । मगध रायबेल वहु तेहजी ॥८४॥
मोगरेल तेल सोधानां बहुअजी । एणे पेरे भर्या कटोरा सहुअजी ॥८५॥
राख्य भरी सहु थालो मांहांजी । गादी बीछापी ज्यांहांजी ॥८६॥
प्रांत राखी आनन्द करीय जी । ते मांहां त्यांहां चोकी धरीयजी ॥८७॥
वस्त्र बीछाव्यु उपर सारजी । जेम वाहालाने सुख अपारजी ॥८८॥
केसर रस हांडे बहु भरीयाजी । ते माहे सुवास सहु धरीयाजी ॥८९॥
तेल गुलाब जले ते बहुअजी । भेली तप्तक सुरा सहुअजी ॥९०॥
अंगीठी राखी चारे पासजी । वात्सल्य अर्थ करे छे दासजी ॥९१॥
वस्त्र भुषण वहु नाना भांत्यजी । आसन पासे राख्या करीखांत्यजी ॥९२॥
सोंधों मद कस्तुरी संगजी । उखेव्या सुवास मन रंगजी ॥९३॥
मंगल कलस राख्या भरी त्याहांजी । द्रव्य पल्लव श्रीफल धर्यु त्यांहांजी ॥९४॥
श्रीफल बे त्यांहां भेटनां राख्यांजी । मंगल वचन रसालां दाख्यांजी ॥९५॥
एणी पेरे भाईश्री करे वेगजी । माहा उछवना नीत्य नवा नेगजी ॥९६॥
ए ओच्छव मांहा रहया छे पागीजी । गोकुल भाई प्रभु अनुरागीजी ॥९७॥
ए ओच्छव नो स्वरूप ए जाणेजी । ए बीजु चित्त न आणेजी ॥९८॥
वरस दिवस लगी एह विचारजी । माहा उच्छव उच्छवनुं सारजी ॥९९॥
एह स्वरूप भाई ए उर आण्युंजी । वल्लभदासे ऐहा संग जाण्युंजी ॥१००॥

॥ ईति श्री मांगल्य चोथु सम्पुर्ण ॥

॥ मांगल्य पांचमुं॥

श्री ॥ श्री ॥ गोकुलेशो जयति ॥ हवे मांगल्य पांचमुं लखीये छीअे ॥ ए गावा मालण आवो हमारे देशजी ॥ एम गवासे ॥

परम शुभ आजनो दिनजी । भाग्य उदीत हवा छे धन्यजी ॥१॥
रेहेवुं सहुए मांहा मग्नजी । भाव सहीत ओच्छव माहा लग्नजी ॥२॥
मागसिर सुदी सातम आवीजी । भक्त रसिक ते ने उर भावीजी ॥३॥
प्रगटया प्रभु दिवस सोहाव्योजी । एह अम तणे भाग्ये आव्योजी ॥४॥

श्री मोहनभाई ने आप्युं दानजी । माहा प्रभु ए सुखनुं निधान जी ॥५॥
केशर रस नाहे आजजी । दान करीयां छे माहाराज जी ॥६॥
श्री मोहन भाई श्री गोकुल भाई जी । कर्या उच्छव ए सुख दाई जी ॥७॥
ते हवडा समे एह आव्योजी । महा उच्छव समे सोहाव्याजी ॥८॥
भाई श्री ने ते उछाहा वाध्योजी । ए दीवस उछव समे साध्योजी ॥९॥
चित्त मांहे मोद अपारजी । भाव स्वरूपात्मक छे सार जी ॥१०॥
ते भावे उच्छव करेयजी । तेणे अर्थे माहा रस भरेजी ॥११॥
नाहवानो समे लह्यो ज्यारेजी । काज करीयां वेगे त्यारेजी ॥१२॥
पछें आव्या त्यांहां सेज्या पासेजी । दंडवत कर्या भर्या हुल्लासे जी ॥१३॥
माहा प्रभु ने ए विनती करीयजी । सेज्या पासे चोकी धरीयजी ॥१४॥
समे थयो छे उठीये राजजी । श्री उछव नां दान करो आज जी ॥१५॥
वेगा उठी प्रभु पाउधार्याजी । श्री मुख जोई सहु ते वार्याजी ॥१६॥
बेठा आसने आवी भूपजी । रस भर्या छे सुंदर स्वरूप जी ॥१७॥
दंत धावन कर्या नित्य रीतेजी । आनदे भर्या वाहालो ए प्रीतेजी ॥१८॥
गठा स्थले गडुओ त्यांहां धर्योजी । तप्त जले करी ते भरीयोजी ॥१९॥
अणुं एक रही भाई श्री आव्याजी । हांडा भरी जमुना जल लाव्याजी ॥२०॥
उष्ण सीतल समोहीने आण्युं जी । वाहालाने सुखद ते जाण्युंजी ॥२१॥
एणी पेरे मंगल बहु साज जी । करी राख्या वाहालाजी ने काजजी ॥३२॥
वाजीत्र एह समे वाजेजी । तेणे करी त्रैणे लोक गाजेजी ॥२३॥
सुन्दरी गाये घोल रसाल जी । भले जनम्यां श्री रूक्मनी लाल जी ॥२४॥
ए आदे धोल ते सहु ए गायेजी । प्रागट समे भर्या उछाहेजी ॥२५॥
कीर्तनीया कीर्तन बहु करेजी । वाजा सहीत त्यांहां उलट भरेयजी ॥२६॥
एणी भांते निरघोष वाध्योजी । प्रागट लही समो ए साध्योजी ॥२७॥
भाई श्री ए उघाडया द्वारजी । नाहासे ए समे प्राण आधारजी ॥२८॥
एह समे छे श्रद्धि अपारजी । निरखे छे उछव सुख सारजी ॥२९॥
भाई श्री गदगद थायेजी । उमडयो आनंद न समायजी ॥३०॥
श्री माहाप्रभु ने त्यांहां विनती करीयजी । नेत्र आव्या छे रस भरीयजी ॥३१॥
पधराव्या गादीए नाथजी । भक्त निरखे त्यांहां सहु साथ जी ॥३२॥
बेठा भाई श्री सनमुख थईयजी । एह समे प्रगटी रस मईयजी ॥३३॥
विनती करी तेल लगावेजी । नम्या श्री चरणे अति भावेजी ॥३४॥

तेल फुलेल चोले श्री अंगजी । फुल्या करे छे तेलाभ्यंगजी ॥३५॥
फुलेल सहु लेई ने हाथ जी । लगावे छे सघलो साथ जी ॥३६॥
एह समे होय रसनी रेलजी । वाधी सुख तणी ए वेल जी ॥३७॥
श्री अंग फुलेल लगावे जी । एह समे सुख वचने न आवेजी ॥३८॥
तेलाभ्यंग भली भांते थायेजी । ए उछाहा कह्यो न जायेजी ॥३९॥
नाहवा तणो समय थयो ज्यारेजी । माहा प्रभु पधराव्या ते त्यारेजी ॥४०॥
चोकी बेठा वल्लभ लाल जी । एह निरखे रस वाल जी ॥४१॥
भाई श्री ए रस लीधो हाथ जी । केशर हांडे भरी वाथजी ॥४२॥
भाव भाई श्री ने उर धरेयजी । अनुभव तणी सुरत करेयजी ॥४३॥
तेणे करी ए रसे भरी आवेजी । वाहालाजी नुं स्वरूप उर लावेजी ॥४४॥
मस्तके मुके केशर रंगजी । रंग रंग छेल्यो छे श्री अंगजी ॥४५॥
जे जेकार समेय ते थायेजी । भक्त प्रभु पर वल वल जायेजी ॥४६॥
नहवरावे छे भाई श्री फरीयजी । जमुना जले कसेड़ीयो भरीयजी ॥४७॥
नाहाए वाहालो रसनी रेलजी । नहवरावे भाई श्री छेन जी ॥४८॥
आप्यां चरणामृत छे त्यारेजी । वाहालो मारो नाही रह्या ज्यारेजी ॥४९॥
वेगे द्वार मांड्या उछाहेजी । एह शोभा कहीय न जायेजी ॥५०॥
एह समे आप्यां बहु दान जी । भक्त करे छे रसनुं पानजी ॥५१॥
करे अंग वस्त्र भाई श्री अंगे जी । केसर भर्या वाहालो रंगजी ॥५२॥
तेल सोंधो लगावे सोहाव्याजी । आसते वाहालो पधराव्याजी ॥५३॥
धोती केसर रंग अती गहेरेजी । सोभा वाधी वाहालोजी पहेरेजी ॥५४॥
सोंधो लगाव्यो चीत्त बहु अजी । सोभा प्रगटी क्यांहां लगो कहुअजी ॥५५॥
भूषण बहु भांते पेहेरावे जी । कुंडल पोहोंचो हेम सोहावेजी ॥५६॥
मुद्रीका मोती माल छे बहु अजी ॥ जडाव सादा धर्या सहुयजी ॥५७॥
सांकली हेम तणी मणी सोहेजी । शृंगार वाहालो नो मोहेजी ॥५८॥
उपरेणो छे रंग अपारजी । जोडो छापेल पामरी सारजी ॥५९॥
ओढ़ाडयो श्री अंगे तेहजी । सोंधो लगाव्यो भरी नेहजी ॥६०॥
तिलक केशर भाले धर्युंयजी । मन वांछीत काज ते सर्युंयजी ॥६१॥
एणी भांते करी शृंगार जी । गुंजा तुलसी माला सारजी ॥६२॥
एणी छबी मारे मुखे न आवेजी । अता सने उपरेणो भावेजी ॥६३॥
ए भांते शृंगार ने अरप्याजी । जल पान भोग ते समर्प्या जी ॥६४॥

मांडया द्वार सेजा घर आव्याजी । सहु साज ए स्थले लाव्याजी ॥६५॥
छात जरी पीछवाई लाल जी । गादी तकीया धर्या रसाल जी ॥६६॥
गुलीचा पर राखे एह जी । धोती उपरेणो केसरी जेहजी ॥६७॥
धराव्यो सोंधो भरीय ते त्यांहां जी । गादी तकीये बीराजे छे ज्यांहांजी ॥६८॥
पामरी सुफेत तोस संगे जी । जोडो धराव्यो ए श्री अंग जी ॥६९॥
मुख वस्त्र केसर रंग घणोयजी । धर्यो तकीयो ते सोंधो मण्योयजी ॥७०॥
धोती उपरणो ते सोंधो सारजी । ए शोभा नो ना आवे तें पारजी ॥७१॥
एणी भांते ए सहु सीद्ध करीयांजी । उछव प्रीते आणी ते धरीयांजी ॥७२॥
वेगा थैय सरावे छे भोग जी । आचमन कर्या समे संग जी ॥७३॥
निज मंदीर द्वार उघाडयां जी । भक्त सहु अने दरस पमाडया जी ॥७४॥
मार्कंड पुजा समे ज्यारेजी । चार सोहासणी आव्यां त्यारेजी ॥७५॥
प्रगट करी आरती लाव्यांजो । मुक्ता ए पुरी अती भाव्यांजो ॥७६॥
शृंगार बहु अंग सोहेजी । साडी ललकती वाहालो मोहेजी ॥७७॥
चोक पुर्या चोकमां सारजी । त्यांहां बेठा छे प्राण आधारजी ॥७८॥
ए समे गाये छे रस भरी वालजी । प्रगट्या श्रीय विठ्ठल लालजी ॥७९॥
करे वाछयल्य सुन्दरी सहुअजी । आयुष वृद्ध आशीस बहुअजी ॥८०॥
कर्युं तिलक अक्षत मध्ये राजेजी । आपे बीडां सुंदरी ते भ्राजेजी ॥८१॥
ईडी पींडी फुले वधाव्याजी । आरती त्यांहां सनमुख लाव्यांजी ॥८२॥
पोहोपहार धरावे छे प्यारी जी । तेह समे प्रगटी छबी न्यारी जी ॥८३॥
एणी पेरे आरती ओवार्या जी । निरखे श्री मुख छबी त्यारेजी ॥८४॥
माहाप्रभुए कर्या सनमान जी । ए समे ईक्षणे आप्या दानजी ॥८५॥
पछे आवी श्री चरणे नमेयजी । भेट करे जे जे ने गमेयजी ॥८६॥
भाई श्री उभा छे पास जी । वाहाला दांन करे हुल्लास जी ॥८७॥
तेणे समे ते विप्रनो नेगजी । दान लेवा आव्यो सहु भेगजी ॥८८॥
आप्या दांन भाई श्री ए बहु अजी । आशीष देई वलीया ते सहुअजी ॥८९॥
मार्कंड समे एहवो सोहेजी । वरजी बेठा जोई मोहेजी ॥९०॥
भोग धर्यो जलेबी सारजी । आरोगे छे प्राण आधार जी ॥९१॥
क्षणु एक रही भोग सराव्योजी । समाज भक्त फरी आव्योजी ॥९२॥
कीर्तनीया कीर्तन त्यांहां करेयजी । गाये जनम वेल मोद भरेयजी ॥९३॥
भाई श्री बेठा सुणे ए परेजी । नित्य उछव होय एहोने घेरजी ॥९४॥

ए शोभा जल हल राजे जी । जल हलतुं स्वरूप बीराजे जी ॥९५॥
श्री मुख क्रांति सुंदर छाजेजी । श्री माहा उच्छव ए रस भर्या भर्याजी ॥९६॥
भाई श्री ए रस मांहां भीजेजी । जरा सुणी वाहाला नो रीझेजी ॥९७॥
ए जश विण ईका न जाणोजी । वाहालानो जग उरमां आणोजी ॥९८॥
जे कोई रहयां एहोनी छायाजी । ते लहेशे जरा उमाहयाजी ॥९९॥
माहा उच्छव होय रस दांन जी । वल्लभ दास करे पान जी ॥१००॥

॥इति श्री मांगल्य पांचमुं संपुर्णम् ॥

॥ मांगल्य छठ्ठु ॥

ठठल नंदाय नमः ॥ हवे मांगल्य छठ्ठु लखीये छीये ॥ ए गावानो चा रणी ने पच कल्याणी ॥ ए रागे गवासे ॥

जे जे जे श्री वल्लभ राज । माहा श्री उछव आव्यो आज ॥१॥
निरघोष वाजीत्र ते वाजे । श्री गोकुल मां हवेलीओ गाजे ॥२॥
आज परम आनंद नो दिन । मनोरथ थया सहु संपन्न ॥३॥
ठाम ठामे कोर्तन बहु थाये । वाजां वाये गुणी जन गाये ॥४॥
ए उछव घेर घेर सोहे । भगवदी दरसन करी मोहे ॥५॥
सेवा सघले श्री चरणे ते थाये । जेम भाई श्री करे उछाहे ॥६॥
एणी रीते सुजाती नो साथ । लडावे श्री उछव ए नाथ ॥७॥
भाई श्री नें संगे एके भावे । सेवा करे श्री चरणे सोहावे ॥८॥
केसरे नाहया भली भांते '। मारकंडे आर्ती होवे खांते ॥९॥
भाई श्री करे छे एणी रीते । माहा उछवे वाहालासुं प्रीते ॥१०॥
एम करतां पोहोर एक थयो । भोग समर्पवा समे ए लहयो ॥११॥
भाई श्री उठावे वेगे करीय । जलपान गडुआ भर्या फरीय ॥१२॥
स्थल सामग्री सिद्ध ते करीयो । छोटो तकीयो उठावी धरीयो ॥१३॥
उपरणो राख्यो छे त्यांहां पास । राज भोग समर्पवा आस ॥१४॥
श्री मंदीर मांडया द्वार । पडघी धरी चोकीओ सार ॥१५॥
ए समे ना साज धर्या नेग । रसांई घर आव्या ते वेग ॥१६॥
त्याहां सामग्री सिद्ध बहुअ । भक्ते फुलसुं सिद्ध करी सहुय ॥१७॥
भाई श्री पोते भोग ते धरेय । प्रथम थाल मांहां माहा रस भरेय ॥१८॥
भात मूंग ने घृत अति सार । कढी आदे सामग्री अपार ॥१९॥
रोटी खीर त्यांहां धरीयां बहुय । साक अनेक आणी धर्या सहुय ॥२०॥

धरे चोकी ने भोंग धराये । निज मंदीर आखु भराये ॥२१॥
व्यंजन बहु धर्या सोहाये । करे उछव लही मन भाये ॥२२॥
पापड वडी मेव छे बहुअ । इडरानो पार न लहुअ ॥२३॥
मठो दही सीखरण अनूप । खीर हांडे भरी मुख रूप ॥२४॥
मानां मोटां पात्रे भरीय । धर्या मंदीर मां नेह करीय ॥२५॥
मंदीर आखु भर्यु ए रीते । वाहालोजी भोजन करे प्रीत्ये ॥२६॥
जलेबी पकवांन मीठाई । भर्या टोकरा धर्या सोहाई ॥२७॥
सखडी भरी छे बहु पात्र । ए कहयु छे सुचन मात्र जी ॥२८॥
एहनो लखतां न आवे पार । भोजन करे भक्त आधार ।२९॥
माहा उछवनी सामग्री छे बहु । भाई श्री समर्पे मेवा सहुअ ॥३०॥
भोजन करे छे वल्लभ वरजी । रस सागर आनंद भरजी ॥३१॥
एणी पेरे आरोगे रसाल । दुध बहुअ धर्या रस बाल ॥३२॥
एणी भांते भोजन प्रभु करेअ । माहा उछव अती रस भरेअ ॥३३॥
भोग सरावा थाये अपार । काज बहु तणो ना आवे पार ॥३४॥
एम करतां समेय थयो ज्यारे । भोग सरावा उठया ते त्यारे ॥३५॥
बीडी खांडी उठे वेगे । भक्त रसीक तणा ए छे नेग ॥३६॥
राज भोग सरावे छे उछाहे । आचमन करावे ते उमाहे ॥३७॥
आरोगावे बीडी कपुर संग । बाहालो आरोगतां उपजे रंग ॥३८॥
तखेंवा अगर ते सुवास । बीडां बहु धरीयां आप पास ॥३९॥
छोटो तकीयो पागे धर्यो सार । श्री कंठे धर्या फुलहार ॥४०॥
मुख वस्त्र नो उपरणो सोहे । उपरणो अग्रासणे मोहे ॥४१॥
त्यांहाँ उमडयो रस रंग भार । ए शोभानो ना आवे पार ॥४२॥
भूषण जोती प्रगटी छे घणीअ । एम राजे आपणे ए धणीय ॥४३॥
श्रष्टि आवी एणे समे बहुअ । निरखे छे वाहालाने सहुअ ॥४४॥
आनंदे फुल्या श्री मुख जोई । वारणां ले छे त्यांहां सहु कोई ॥४५॥
किर्तनीया त्यांहां कीर्तन करेय । पद गाये छे उलट भरेय ॥४६॥
प्रागट समे मंगल रूप । निनखी छबी सुन्दर स्वरूप ॥४७॥
ए समे वाजे वाजित्र सहुअ । गायके गुणी जन आव्या बहुअ ॥४८॥
पहेरामणी थाये श्री अंग । पाघ धरावे केसरी रंग ॥४९॥
फरगुल भाये रंग भांत । छापा सोनेरी करीया खांत ॥५०॥

धोती उपरणो पाको संग । केशर सोंधे भर्यो बहु रंग ॥५१॥
पामरी जोडो ते बुटादार । पहेरामणी करे भाई श्री सार ॥५२॥
वल्लभ वर बेठा त्यांहां सोहे । वागो श्री अंगे धर्यो मन मोहे ॥५३॥
छबी प्रगटी न्यारी अनुप । गादी तकीये बीराजे छे भूप ॥५४॥
एणी भांते आसन पर राजे । फरगुल छापेल जोडो छाजे ॥५५॥
ए शोभा त्यांहां लगी कहुअ । अक्षरे नावे मनमां लहुअ ॥५६॥
पछे भाई श्री उछाहा ते भरीया । पहेरामणी करे मनोरथ सरिया ॥५७॥
वस्त्र भूषण द्रव्य अनेक । आपे सहु ने करी ते विवेक ॥५८॥
एणी भांते संतोष्या छे सहुअ । नोछावरी करी आपी ते बहुअ ॥५९॥
नाउंवारी वाजींत्रीय संग । कभाय कीर्तनीया ने रंग ॥६०॥
एणी भांते पहेरामणी बणीय । चीरा पटका पामरी आवी घणीय ॥६१॥
आप्या उपरणा ते सहु ने ते भरीय । उछवे ए भाव उर धरीय ॥६२॥
छिरक्यां केसर भक्त अंग । सुंदर वागा भर्या बहु रंग ॥६३॥
सोंधा लगाव्या अति सार । शोभा प्रगटी छे ते अपार ॥६४॥
ए भांते श्री उच्छव थाये । आनंद ए अंग ना माये ॥६५॥
थयो संध्या समे शुभ ज्यारे । दीपक धर्या सघले ते त्यारे ॥६६॥
शोभा प्रगटी विलक्षण त्यांहां । वाहालोजी बेठा आसने ज्यांहां ॥६७॥
प्रागट समे भाई श्री ये लह्यो ए । एक घडी छप्पन पल कह्यो ए ॥६८॥
रात्री वितीत थईअ ज्यारे । प्रागटय थयुं वाहालाजीनुं त्यारे ॥६९॥
गाये सुंदरी मंगल गीत । वाहालाजी सुं अती घणी प्रीत ॥७०॥
प्रगटयुं रत्न रूक्मिनी लाल । कुख रस भरी अतीय रसाल ॥७१॥
एथी प्रगट्यो रत्न अनुप । अद्‌भुत ए गोकुल नो भुप ॥७२॥
एणी भांते कीर्तन बहु थाये । भक्त लही प्रागट समे गाये ॥७३॥
प्रगटयो आनंद अती बहुअ । ए नाचे नारी नर सहुअ ॥७४॥
एह समे आपे दान ओवारी । भक्त आपापणे मोंदे भारी ॥७५॥
भाई श्री ते आनंद भर्या जोये । एह समेनो समता नही कोये ॥७६॥
एणे समे आरती सुख रूप । निरखे सहु सुंदर स्वरूप ॥७७॥
प्रगटी आरती लाव्यां ज्यारे । जै जैकार करे सहु त्यारे ॥७८॥
तिलक धरी बीडां कर मांहां । टोडर अरपे श्री कंठे ते त्यांहां ॥७९॥
इडी पीडी वारतां सखी भाव्या । सोना रूपा मोतीये वधाव्या ॥८०॥

आरती वारी नामे ते सीस । चिरंजीवो ए कोटी वरीस ॥८१॥
आशीष दे सहु एके भावे । मांगे फरी ए समे वेगे आवे ॥८२॥
ए उछव सदा एणी पेरे । थाये श्री विठठल जी ने घेर ॥८३॥
एणी भांते उछव सुख सार ॥ भाई श्री करे मोद अपार ॥८४॥
वाछल्ये राई लुण उतारे । एणी पेरे आपापु वारे ॥८५॥
भावे सहु पुरण थाये । गोप्य भावे लेखने न लखाय ॥८६॥
माहा श्री उछव जीवन रूप । एहनी समता एह स्वरूप ॥८७॥
भाई श्री ए प्रगट कर्यो एह । उछव जाण्यो स्वकीय ते नेह ॥८८॥
ए सेवा ए उछव सार । श्री चरणे प्राण आधार ॥८९॥
गोकुलेश स्वरूप रस रास । भाई श्री तणी पुरी छे आस ॥९०॥
भाईआ विठट्ल दास ते कहीये । माधव दास खवास ते लहीये ॥९१॥
एहोने उछाहा अंग ना माये । देह तणी सुधी ते भुली जाये ॥९२॥
उछवे ए माहा अनुरक्त । रस विशे थाये अतिमत्त ॥९३॥
एणी भांते ए भगवदी ए साथ । लडावे छे श्री गोकुल नाथ ॥९४॥
तीकम दास छोटा ते कहीये । ए आदे भक्त सहु ते लहीये ॥९५॥
एम करतां रात्र पोहोरे जाये । माहा श्री उछव एम सोहाय ॥९६॥
एम साज सहु संत्र गाजे । गोकुल भाई ए मध्ये राजे ॥९७॥
पछें पधरावे सुख सेज्या ए । भक्त रसीक ने फुल ना माये ॥९८॥
पोढे सुख नीधी सुखनुं सार । रस दांन करे छे उदार ॥९९॥
माहा श्री उछवनां करे गांन । वल्लभ दास ने ए आत्या दांन ॥१००॥

॥ इति श्री छट्ठु मांगल्य सम्पूर्ण ॥

॥ मांगल्य ७मुं ॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ गोकुलेशो जयति ॥ श्री वल्लभ रसीक स्वरूप जयति
य सातमुं लखीये छीये ॥ एह गावानी जात ॥ सहीयर समाणी ते
सोहागी साथ वल्लभ वर ने निरखीये ॥ ए रागे गावासे ॥

परम रसोवई पुरूप ए । श्री वल्लभ वर राये माहारस भोक्ता ॥१॥
नख थी शीख ते रस भर्या । रस तणुं नावे प्रमाण ॥ माहा रस भोक्ता ॥
कोई एक रस ए सुचन करू । महा प्रभु परम सुजाण ॥ माहा ॥२॥
केस श्री मस्तके शोभिता । चलकता रस भर्या राजे ॥ माहा ॥
महा रस भर्यो सोहीये जुडी वाल्यो । ग्रीवा पर अती भ्राजे ॥ माहा ॥३॥

नेत्र छे रस तणी खांण ए। भक्त रसीक रस सींचे ॥ माहा ॥
नेत्र नो रस छे सर्व उपर । बीजा रस एथी नीचे ॥ माहा ॥४॥
ते जाणे अनुभवी पात्र ए । रसोया नयणां भोगी ॥ माहा ॥
ए रस जाणे मारो वाहलमो । विराजे रस संयोगी ॥ माहा ॥५॥
तिलक भाले माहा रस भर्यु । छेल्यो कपोले रस बहु ॥ माहा ॥
गल स्थल बहु रस भर्या । रसीया जाणे ए सहुय ॥ माहा ॥६॥
नासीका चंपक वरण ए। सुवास रस तणो लेवा ॥ माहा ॥
श्री मुख वचन माहा रस भर्यु । बोले रस सुख देवा ॥ माहा ॥७॥
जीभ मां रस ए अगाध्य छे। प्रमाण कर्युअ न जाय ॥माहा ॥
अधर लाल बेहु रस भर्या । भक्त रसीक ललचाये ॥ माहा ॥८॥
मोहोसर सोहे रस चुंचती। ठोडी रस तणुं धाम ॥ माहा ॥
मुखारविंद सहु रस भर्यु । परम रस अभीराम ॥ माहा ॥९॥
कर्ण द्वारा रस सींचाये । भक्त नां वचन रसाल ॥ माहा ॥
सुंदर ग्रीवा पर सोहे । भूषण तुलसी माल ॥ माहा ॥१०॥
उर पर माहा रस सींचीयो । रसीया संग भली प्रीते ॥ माहा ॥
उरोज ते रस भर्या उच ए । प्रगट विराजे रस रीते ॥ माहा ॥११॥
उदर संपुरण रस भर्यु । नाभी कमल रस रंग ॥ माहा ॥
पीठ थी रस अती छेलीयो । श्री हस्त भर्या रस संग ॥ माहा ॥१२॥
कटी आदे रस पुरण । माहा रस अदेय दे दांन ॥ माहा ॥
जघां कदली रस बहु भर्यो । रसीयां करे रस पांन ॥ माहा ॥१३॥
पिंडुरीये रस अती घणो । भक्त तणुं विश्राम ॥ माहा ॥
श्री चरणार्रविंद रसें रस । अमारू ए अभीराम ॥ माहा ॥१४॥
धोती उपरणो रंग केसरी । पेहेर्यो छे श्री अंग सोहीये ॥ माहा ॥
सोभा हुं क्यांहां लगी कही सकुं ॥ देखतां मात्र मां मोहीये ॥ माहा ॥१५॥
भूषण धर्या छबी अद्भुत । माहा उछव नो दीन दीन ॥ माहा ॥
जाण से अनुभवी गुणतां ए। मान शे आपोपु धन्य ॥ माहा ॥१६॥
क्यांहां लगी कहुं रस प्रभु तणो । छेल्यो रस अंग अंग ॥ माहा ॥
रोमावली द्वारा रस चाले । रस रंग रंग ॥ माहा ॥१७॥
एणी भांते माहरो नाथ ए । विराजे रस भर्या नित्य ॥ माहा ॥
आपणुं एह जीवन धन्न । राखवुं एह रसे चित्त ॥ माहा ॥१८॥

एहवा जे श्री गोकुलेशजी । भक्त तणो शृंगार ॥ माहा ॥
सदा सर्वदा एहज रीते । बीराजे भक्त आधार ॥ माहा ॥१९॥
ए स्वरूप रसे भर्युं । ते तणी सेवा अती अती सार ॥ माहा ॥
भाई श्री करे अती प्रेम सुं । चरणारविंद आधार ॥ माहा ॥२०॥
हवे कहीए ते विस्तारजी । आगलो प्रसंग छे जेह ॥ माहा ॥
माहा उच्छव नां सुख बहु । कही आव्या उछाहा भर्या एह ॥ माहा ॥२१॥
मांगल्य सुदी सातेम तणी । रात्र छे माहा रस रूप ॥ माहा ॥
पोढ़्या छे महाप्रभु एह समे । रस भर्या सुंदर स्वरूप ॥ माहा ॥२२॥
एह दीवसे दांन अति कर्या । श्रमीत रसे भर्या आज ॥ माहा ॥
पोढ़्या समे नो रस अद्‌भूत । अनुभवी जाणे समाज ॥ माहा ॥२३॥
अष्टमी नी रात पाछली । रसमांहा रही घड़ी चार ॥ माहा ॥
भाई श्री आव्या न्हाई ने । एह समे मोंद अपार ॥ माहा ॥२४॥
भाई श्री सेवा करे नित्य रीते । जगाव्या माहाप्रभु वेग ॥ माहा ॥
दंत धावन तेल्याभंग हवां । धोती शृंगार धर्या नेग ॥ माहा ॥२५॥
धोती उपरणो रंग केसरी । मरगजो सोंधे भर्यो सोहे ॥ माहा ॥
भूषण जडाव नां वहु धर्या । ए जोई मन त्यांहां मोहे ॥ माहा ॥२६॥
फरगुल छापेल ललकती । तिलक कर्या शुभ भाल ॥ माहा ॥
ए सहु कर्या नित्यनी रीते । भोग धर्या ते रसाल । माहा ॥ २७॥
राजभोग बहु भांते सु । समरपे अति घणी प्रीते ॥ माहा ॥
प्रथम दीवस प्रागट्य तणो । उच्छव करे रस रीते ॥ माहा ॥२८॥
भोग सरावी एह समे । करे छे नीत्यना नेग ॥ माहा ॥
बीडां समरपे प्रेम सुं । गडुआ धरे सहु वेग ॥ माहा ॥२९॥
पुष्प ना हार धरावीया । सुगन्ध फेंनी मकरंद ॥ माहा ॥
वेगे द्वार उघाडीयां । निरखे नैनारवींद ॥ माहा ॥३०॥
ए समे गुणी जन गाये । फुल्या मांगे छे वधाई ॥ माहा ॥
दे आसीस मोदे भर्या । चीरंजीवो सुखदाई ॥ माहा ॥३१॥
एह समे नोछावरी घणी । भक्त आपे मन भाई ॥ माहा ॥
बाजां वाजे बहु अती घणां । शोभा कहीय न जाई ॥ माहा ॥३२॥
एणी भांते माहा उच्छव । थाये रंगना रोल ॥ माहा ॥
भक्त फुल्या सहु एह समे । गाये उच्छव तणां घोल ॥ माहा ॥३३॥

एह समे भाई श्री फुल्या ते । साथ गुजाती फुल्या अंग ॥ माहा ॥
भेर भेट भुषण बहु । भाव अनेरे रस रंग ॥ माहा ॥३४॥
एणे समे फरी आरंभ करे । उच्छव आव्यो ए वेगे ॥ माहा ॥
विठ्ठल दास माधव दास । मीसरी आपे उच्छव नेगे ॥ माहा ॥३५॥
ए उच्छव अभीलाप सु । सहु तणे भाग्ये आव्यो ॥ माहा ॥
एम करे ए मनोरथ भर्या । ते रस मांहां तेह ॥३६॥
एणी भांत्ये ए उच्छव कहयो । सुचन करी सुखसार ॥ माहा ॥
वरसो वरस ते एम होये । लखतां ना आवे पार ॥ माहा ॥३७॥
हवे कहेसुं ते आगल होये । उच्छव बीजा मोदे ॥ माहा ॥
करमे वाहालोजी दांन ए । लखसुं करी ए प्रमोदे ॥ माहा ॥३८॥
उच्छव श्री गुसांई जी तणो । पोष वद्री नोंमी दोन्न ॥ माहा ॥
एह दीवस नहरावे छे । ए ओछव आज धन्य ॥ माहा ॥३९॥
केशर रसे रंग नाहीय । धरावे धोती माहा रंग ॥ माहा ॥
पहेरावे भुषण श्री अंगे । उपरेणो फरगुल संगे ॥ माहा ॥४०॥
तुलसी माला तीलक धर्या । प्रगटी छबी ए अनुप ॥ माहा ॥
ए उछवे फुल अती घणी । श्री वल्लभ वर भुप ॥ माहा ॥४१॥
भोग सामग्री अति घणी । समरपे मनोरथे आज ॥ माहा ॥
सखडी पकवान धरे बहु । आरोगे प्रभु माहाराज ॥ माहा ॥४२॥
उछव ए रीते थाये छे । भोग राग संयोग ॥ माहा ॥
भोजन करे वाहालो प्रेम सु । भोगता माहा रस भोग ॥ माहा ॥४३॥
एणी भांते राज भोग ए । आरोगी रहया वाहालो एह ॥ माहा ॥
घणी चार ते वितीत थई । भोग सराव्यो वेग नेह ॥ माहा ॥४४॥
करावी आचमन बीडां धर्या । आरोगे वाहालो धरी नेह ॥ माहा ॥
उघाडयां द्वार एणे समे । दरसन करे भक्त एह ॥ माहा ॥४५॥
गाये त्यांहां कीर्तनीया । एह जन्म समे नां पद ॥ माहा ॥
ताल मृदंगं वाजां वाजे । गातां वाध्यो अती मद ॥ माहा ॥४६॥
भाई श्री ते समे करे सहु । ओछव तणां जे छे नेग ॥ माहा ॥
ए उछव तणी भांती सु । करे काज सहु वेग ॥ माहा ॥४७॥
माहा उछव नो समे लही । करे मंगल बहु काज ॥ माहा ॥
साथीया तोरण सिद्ध कर्या । ओल्छव लही सुख आज ॥ माहा ॥४८॥

ए ओछव एहुज रीते । भाई श्री करे अती सार ॥ माहा ॥
लख्युं छे एह सुचनका करी । लखतां नां आवे पार ॥ माहा ॥४९॥
लखमुं हवे ते माहा मुद मांहां । वसंत पंचमी जे थाये ॥ माहा ॥
आरम्भ वसंत नो एह दीन्न । भाई श्री करे मन भाये ॥ माहा ॥५०॥
वसंत पंचमी छे रस रूप । रस उपजावे वे बहुअ ॥ माहा ॥
एह दीवस थी अनंग वाधे । रसीया रस अंगे सहुअ ॥ माहा ॥५१॥
आज ने दीन रस वाधीयो । श्री वल्लभ माहाराज ॥ माहा ॥
सदा करे छे रग दांन ए । तेथी अधीक होये आज ॥ माहा ॥५२॥
वाहालो माहरो ए छे रस रूप । नित्य नित्य करे रस वृष्टि ॥ माहा ॥
अनुभवी ए रस भक्त छे ।। सहु थकी न्यारी ए शृष्टि ॥ माहा ॥५३॥
भाई श्री ए रस मांहां रंग्या । एहवी शृष्टि छे न्यारी ॥ माहा ॥
ए रस तणो जे मनोरथ । अंग अंग आनन्द भारी ॥ माहा ॥५४॥
भाई श्री करे सेवा तणां काज । वसंत नो ते सहु साज ॥ माहा ॥
श्वेत साज बांध्या भरीअने । खेलाव्या वसंते ते आज ॥ माहा ॥५५॥
समीयाना पीछवाई बांधीया । श्वेत साज ए सोहाई ॥ माहा ॥
आसन तकीया गादीये । वस्त्र श्वेत मन भाई ॥ माहा ॥५६॥
तकीया तणो साज त्यांहां धर्यो । श्वेत अती सोहे ॥ माहा ॥
धोती उपरेणो पाघ ए । चोलणो श्वेत मन मोहयो ॥ माहा ॥५७॥
पटको श्वेत कसुबी कोर । ए आदे श्वेत सहु साज ॥ माहा ॥
एणी पेरे सहुय ते श्वेत । ए करवा ए मंगल काज ॥ माहा ॥५८॥
ओछव जाणी ए सहु कर्या । साथीया तोरण द्वार ॥ माहा ॥
भाई श्री आव्या ते नाहीने । जगाव्या श्री प्राण आधार ॥ माहा ॥५९॥
कर्या काज सहु नित्य रीते । पधराव्या आसने माहाराज ॥ माहा ॥
नित्य कृत्य करीयां ते नेम सुं । निरखे सहु ए समाज ॥ माहा ॥६०॥
तेल्याभ्यंग करी माहाप्रभु । केसरे नाहया अती प्रीत्ये ॥ माहा ॥
पाछें ते नाहे जल तप्त सुं । उछाहे सदा तणी रीत्ये ॥ माहा ॥६१॥
भाई श्री करे अंग वस्त्र ए । श्री चरणे धर्या नेह ॥ माहा ॥
फरी फुलेल लगावीयां । पधराव्या आसने एह ॥ माहा ॥६२॥
धोती जोड़ो पहेरावीयो । भुषण तुलसी माल ॥ माहा ॥
चोल श्वेत उपरेणो ते । धरावे तिलक ते भाल ॥ माहा ॥६३॥

एणी पेरे श्रृंगार ए। करीया माहा रस रंग ॥ माहा ॥
भोग समर्पे समे जोई । पकवान सामग्री संग ॥ माहा ॥६४॥
समर्पे पछी राजभोग त्यांहां । सखरी व्यंजन अपार ॥ माहा ॥
जेम कही आव्यो छुं ओच्छवे । धरे ते सुखनुं सार ॥ माहा ॥६५॥
भोजन करे छे त्यांहां माहाप्रभु । भक्तना मनोरथ सहीय ॥ माहा ॥
एम करतां घड़ी चारे ए । भोग सरावे लहीय ॥ माहा ॥६६॥
आचमन करी बीडां बहु धरे । एह समे नां काज करीयां ॥ माहा ॥
वेगे द्वार उघाडीयां । निरखे आनंदे भरीय ॥ माहा ॥६७॥
भाई श्री लाव्या वेगे करी । वसंत ना सहु साज ॥ माहा ॥
बेठा पासे ते उछाह सुं । खेलाववा वसंत माहाराज ॥ माहा ॥६८॥
सोंधो लगावे प्रेम सुं । अबीर उडावे रंग ॥ माहा ॥
लाग्यो अरगजो श्री अंगे। झलके भुषण नग नग ॥ माहा ॥६९॥
फुल ना हार धरावीया। केसर सोंधा भर्या संगे ॥ माहा ॥
गुलाब चोले लेई हाथमां । छीरके केशर श्री अंगे ॥ माहा ॥७०॥
तकीयो छोटो मोटो ते । छीरक्यो पेरे भरीय ॥ माहा ॥
समीयाना छात आसन सहु । छीरके केसर अबीर करोय ॥ माहा ॥७१॥
एहज रीते भीतर कर्या। गादी तकीये खेलाव्या ॥ माहा ॥
वसंत नों खेल अती होये । खेलावे भाई श्री त्यांहां भाव्यां ॥ माहा ॥७२॥
एणे समे कीर्तन होये । वसंत समेनां जे सार ॥ माहा ॥
धमार पद जस वाहालोनो । गातां न आवे पार ॥७३॥
मृदंग नगारां लाल ताल । वाये ढोलकी डफ संग ॥ माहा ॥
गाये कीर्तनीया एणी भांत्ये । आनंद भर्या अती रंगे ॥ माहा ॥७४॥
एहोने छीरक्या केसरे करी । भर्या अबीरे बहु एह ॥ माहा ॥
अबीर उडाव्यां लेई चोहो पासे । कहीय न जाये सोभा तेह ॥ माहा ॥७५॥
राजे सनमुख माहाप्रभु । आसन पर एह सोहे ॥ माहा ॥
त्यांहां आव्या सुंदरी संग मली । श्री मुख नीरखतां मोहे ॥ माहा ॥७६॥
प्रगट करी आरती लाव्या । तिलक धर्युं श्री भाल ॥ माहा ॥
बीडां आपे ते श्री हस्तमां । भावे करो रसाल ॥ माहा ॥७७॥
ईडी पींडी ओवारी ने । निरखे ते एह सकुमारी ॥माहा ॥
आरती वारी वारे आपोपुं । एह समे मोद ते भरी ॥ माहा ॥७८॥

आवी श्री चरणे तेह नम्या । मनोरथ करे जे विचार्या ॥ माहा ॥
एह छबी जुवे सखी फरी फरी । वाहालोजी उर मांहां धर्या ॥ माहा ॥७९॥
भाई श्री आपे न्योछावरी । कीर्तनीयां ते त्यारे ॥ माहा ॥
माहा वसंत पंचमी ऐ । एम होये खेलावे शनीवार ज्यारे ॥ माहा ॥८०॥
फागण सुदी माहा पंचमी । पालखी उच्छव आव्यो ॥ माहा ॥
एणे दीवसे ते एमज होये । वसंत पंचमी सोहाव्या ॥ माहा ॥८१॥
भाई श्री करे छे ए उछव । खेलावी वसंत ते आज ॥ माहा ॥
नोछावरी आपी भोई ने । मल्या भोई ए समाज ॥ माहा ॥८२॥
एह दीवस उछाहा घणो । भाई श्री स्वकीय ए साथ ॥ माहा ॥
एम करतां द्वादसी थकी । खेले वसंत प्राणनाथ ॥ माहा ॥८३॥
भाई श्री खेलावे प्रमोद सुं । दिवस चार लगी नेहे । माहा ॥
फागण सुदी पुनेम दीन्ने । खेले उत्थापन्ने स्नेह ॥ माहा ॥८४॥
उत्थापन थकी मांडी ने । खेले पोहोर एक रात ॥ माहा ॥
केसर तेल गुलाल ए । अरगजा अती बहु जात ॥ माहा ॥८५॥
कस्तुरी अंबर जवाद ए । मेंद सोंधा रस सार ॥ माहा ॥
अबीर धर्या सहु रंग रंग । भरी आव्यां ते अपार ॥ माहा ॥८६॥
माहा प्रभु बेठा आसन पर । श्वेत साज त्यांहां सोहे ॥ माहा ॥
श्रंगार करीने सुन्दरी आव्यां । स्वेत साडीये वाहालो मोहे ॥८७॥
ए सहु आप्यां सौभागीयां । खेलाव्या रसीक सुजाण ॥ माहा ॥
साज खेलाव्या नो लावीया । अंग अंग तणी रस खाण ॥ माहा ॥८८॥
छिरके केसर सहु सुंदरी । अरगजा लगावे श्री अंग ॥ माहा ॥
सोंधा तेल लगावी ने । अबीर उडावे महारंग । माहा ॥८९॥
छिरके गुलाव सों पीचकारी । भरी भरी केसर तेल ॥ माहा ॥
खेले वाहालोजी एणी पेरे । भक्त संगे रनरेल ॥ माहा ॥९०॥
एणी पेरे खेल ते अती होये । भाई श्री ए सुख जोये ॥ माहा ॥
ए रस सर्वो पर ते छे । ए माहे ग्यात नहीं कोये ॥ ॥९१॥
एणी रीते खेल डोल नो थयो । ए रस मांहां पागी ॥ माहा ॥
वाहालो माहरो आनंद मई । रसीयो रह्यो रसे लागी ॥ माहा ॥९२॥
आरती कर अने एह समे । श्री चरणारवींदे नम्या ॥ माहा ॥
थया मनोरथ पुरण । कीधा उछाहा ते गम्या ॥ माहा ॥९३॥

पड़वानो दीवस ए डोलनो । माहा ए केसरे ए दीन्न ॥ माहा ॥
धोती उपरणो केसरी कोर । धरावे भाई श्री माहा धन्न ॥ माहा ॥६४॥
भुषण बहु तुलसी माल । धरे तिलक श्री भाल ॥ माहा ॥
भोग राग बहु ए समे । आरोगे प्रभु ए रसाल ॥ माहा ॥६५॥
आरती करे पछें सुंदरी । जुअे श्री मुख भरी भावे ॥ माहा ॥
नोछावरी वारी प्रभु पर । आपतां एह मोहावे ॥ माहा ॥६६॥
एणी पेरे डोलनो दिवस ए । मरगजे वागे रस रूप ॥ माहा ॥
एह छबी सहीत वीराजे छे । श्री गोकुलेश स्वरूप ॥ माहा ॥६७॥
करे छे भाई श्री ओच्छव । जे जे आवे ते ते प्रीते ॥ माहा ॥
प्रकार सेवानो ते एहज जाणे । करे छे वाच्छल्य रीते ॥ माहा ॥६८॥
कहयुं छे सुंचनका मात्र । डोल नो खेल अपार ॥ माहा ॥
महेद कृपा थकी ए जाण्युं । वल्लभ दासे सुख सार ॥ माहा ॥६८॥

॥ इति श्री सातमुं मांगल्य संपुर्णम् ॥

॥ मांगल्य आठमु ॥

रमशो जयति :। श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री वल्लभो जयति ॥ हवे मांगल्य छीये ॥ ए गावानी जात्य ॥ आण्यो रे गोकुल केरो राजीयो ॥ एम गवाशे ।

परम पुरूष श्री वल्लभ वर । एहोनी लीला छे नीत्यजी ॥
सदा सर्वदा एहज रीते । लीला अविचल सत्यजी ॥१॥
राजे श्री गोकुल प्रभु । भक्त सहीत मारो नाथ जी ॥
स्वकीय सुजाती अंगवद श्रष्टि । ज्यांहां प्रभु त्यांहां ए साथजी ॥२॥
एहो तणी लीला छे रस रूप । ते जाणे छे ए भक्त जी ॥
जाण मे ते एह जणावसे लहेशे । ए अनुरक्त जी ॥३॥
ए स्वरूप माहा रसे भर्युं । अंग अंग रस तणी खांणजी ॥
आपे दांन ते एह रीते । प्रभुनी सदा ए छे वांणजी ॥४॥
कहीये हवे जे सेवा होय । भाई श्री जाणे ए पेरजी ॥
डोल नो प्रसंग पहेलां कहयो । प्रफुल्लीत आनंद भेरजी ॥५॥
चैत्र सुदी आवे राम नौमी । भोग समर्पे एहजी ॥
राजभोग आवे प्रथम ते । भोजन करे प्रभु तेहजी ॥६॥
भोग सर्या पछी । फलहार तणो समर्पे भोगजी ॥
आरोगे वाहालो ए प्रीतमुं । समर्पे करी ने संजोगजी ॥७॥

एह दीवस ते एमज होये । एकादसी तणी रीत जी ॥
भाई श्री करे अति प्रेम सु । माहा प्रभु सु घणी प्रीत्यजी ॥८॥
एकादसी नो आग्रह घणो । माह प्रभु ने ते सोहायेजी ॥
तेणे करी भक्त सहु करे । ए रीते मन भायेजी ॥९॥
भाई श्री तणो ए छे अनुभव । जाणे ए अनुभवी पात्र जी ॥
आसे प्रभु नो एहज जाणे । लख्युं सु चनका मात्र जी ॥१०॥
कहे सुं हवे ते उछाह सुं । चैत्र मास मां जे थायेजी ॥
महाप्रभु ने एक सुख घणुं । अती सुवास मंन भायेजी ॥११॥
एणे मासे ते फुल छणां । निवारो आवे छे वहुअजी ॥
उत्थापन थी रात्र लगी । गुंथे मलो सहुअजी ॥१२॥
प्रातःकाले मंडली करे । पीछवाई ए ते सोहेजी ॥
वेला चमेली चंपा घणा । केवडो प्रभु मन भावेजी ॥१३॥
भोजन करी बेठा सोहे । तेणे समे एह राजेजी ॥
फुल तणी शोभा घणी । मंडली करे अती भ्राजेजी ॥१४॥
एहज रीते मास एक । भाई श्री सेवा करे रम्यजी ॥
जाणे जे अनुभवी एह । करे छे ते सहु तेमजी ॥१५॥
ए सुख नो अनुभव घणो । अनुभवी तणां जाणे मंन्नजी ॥
ए समे आप्या दान बहु । मनोरथ कीधा संपन्नजी ॥१६॥
भाव तेह उरमां धरी । भाई श्री करे एणी पेरेजी ॥
एह जोई सेवा सहु करे । भक्त आपापणे घेरजी ॥१७॥
सेवाना ते प्रकार बहु । जेवी रीत तेवा करेयजी ॥
उत्तम वस्त्र सामग्रीओ । वाच्छल्य करी करी धरेअजी ॥१८॥
भुषण नौतन वली करे । एक होये बीजा लावेजी ॥
आठे पोहारे ए विचारमां । मन रहे ते एक भावेजी ॥१९॥
वागा वस्त्र सुफेद बहु । करी करी राखे ते सारजी ॥
गुरवी अगर नवो लेई । सोधा काढे छे अपारजी ॥२०॥
अंबर कस्तुरी भेद सहु । भरी भरी राखे फुलेलजी ॥
उष्ण काले वस्त्र अती गाठा । कोमल सुख तणी वेलजी ॥२१॥
सीत काले खासा साजे वस्त्र । करे एणी पेरजी ॥
समे समेना जे जोई ए । करी करी राखे मोद भेरजी ॥२२॥

एम करतां आव्यॉं ओच्छव के। वैशाख वदी शुभ मासजी ॥
एकादसो ने दीवसे एह । प्रगट्या अती हुल्लासे जी ॥२३॥
आचार्यजी ने प्रगट हवा ए । ओच्छव छे ने आज जी ॥
प्रगट्या प्रभु की आज्ञा थकी। करवा भक्तनां काज जी ॥२४॥
मारग प्रगट कर्योय ते। परम ए रस माहा रुपजी ॥
ए अर्थे प्रागट्य हवा । प्रागट हवुं छे अनुपजी ॥२५॥
ए मारगना छे भोगता। श्री गोकुलेश स्वरुपजी ॥
भक्त ने आप्यां मे दांन घणां। रस मारगी ए अनुपजी ॥२६॥
इच्छा एहोनी थकी । फल मारग ए सारजी ॥
आचार्य जी नो जन्म दीन । प्रभु ने मोद अपारजी ॥२७॥
भाई श्री करे छे दिवस एह । ओच्छव आनंद करोयजी ॥
नहवरावे ने केसर रंगे ॥ प्रभु सुं स्नेह अनी भरीयजी ॥२८॥
धोती उपरणो ते केसरी। रंगीन सोंधे ए भरीयोजी ॥
भाई श्री ए ते वेग सुं। श्री अगे लेई धरीयो जी ॥२९॥
ते शोभा क्याहां लगी कहुं । केशर भर्या माहा रंगजी ॥
भुषण धराव्यां जड़ावनां । हीरा माणेक मंगजी ॥३०॥
चलके ते सुंदर घणुं । सोभा तणो नहीं पारजी ॥
तुलसी गुंजा श्री कंठे घरी । केसरी तीलक ए सारजी ॥३१॥
उपरेणो सोहे केसरी ॥ सोंधे भर्यो अती राजेजी ॥
बेठा महो प्रभु एह सोहे ॥ आसन उपर गाजेजी ॥३२॥
साथीया तोरण एह कयां । मांगल्य उछव लहीयेजी ॥
भाई श्री करे सहु एह दीन्न। भाव ते एनोना छे सहीयजी ॥३३॥
राजभोग धरे प्रथम ते । सामग्री छे बहुअजी ॥
फलहार अनेक वीधी करी। समरपे वाहाला ने सहुअजी ॥३४॥
जे जे वस्तु उत्तम होये। एत समे धरेय ते त्याहॉंजी ॥
भोजन करे प्रभु एणे गमे । आनंदे अती उरमांहां जी ॥३५॥
एहज रीते ओछव होये । भोज मरावे ते वेगजो ॥
दरसन होय ते सहुअ ने । ते समे ना करे छे नेगजी ॥३६॥
फुल्या माहा प्रभु एणी पेरे । भाई श्री फुल्या ए जोईजी ॥
प्रभु फुल्या अंग अंग प्रती । एहोनी समता न कोई जी ॥३७॥

माहा ऊच्छवनी सुरत करी । ते भाव करे एहजी ॥
सदा सर्वदा सोच एह । श्री उछवे सुख जेहजी ॥३८॥
वैशाख सुदीमां उछव एक । अक्षद त्रीज ते करीय जी
एह दीवसे प्रभु नाहे छे । केसर चंदन भरीय जी ॥३९॥
वस्त्र ते गाठां कोमल घणु । स्वेत सुंदर त्यांहां ते घरेयजी ॥
घोती उपरेणो स्वेत अती । पेहरावे सोंधे भरीय जी ॥४०॥
धोती घरावी स्वेत घणु । आभुषण त्यांहां अती सोहेजी ॥
उपरेणो स्वेत ते उपर । ए जोई भक्त ते मोहे जी ॥४१॥
तुलसी माला तिलक सोहे । शृंगार एणी पेरे करीयाजी ॥
राज भोग ने उछव रीते । सीतलं भोग ते धरीयाजी ॥४२॥
पणों संगे दाल सहु घरे । उछव नाजे नेगजी ॥
सखडी पाक ते अती बहु । समरपे ते सहु भेगजी ॥४३॥
भोजन करे वाहलो प्रेमसु । चंदन उछव आजजी ॥
भोग सरावी ने काज कर्या । आणी धर्यो सहु साजजी ॥४४॥
द्वार उघाड्यां ते वेगसु । आपे दरसन नाथजी ॥
कीर्तनीया त्यांहां कीर्तन करे । श्री मुख जोये सहु साथजी ॥४५॥
भाई श्री एह समे आवोयां । छीरके गुलाब श्री अंगेजी ॥
लगावे अरग जो नेहसु । माहा प्रभु ने भर्या रंगेजी ॥४६॥
पंखा धरे त्यांहां सुंदर घणु । गादी तकीये परेजी ॥
उष्ण काले ना आरंभ करे । एह दिवसे मोंद भेरजी ॥४७॥
ग्रीष्म रितु आवी जेष्ट मांहां । गरमी तणो नही पारजी ॥
वाहालाने जे सुखद होय । करे ते शीतल साजजी ॥४८॥
शनीवार ते अभ्यंग करे । आंवला गुलाव ने करीयजी ॥
धोती उपरेणा ने स्वेत ए । तनमुज ना मेदे भरीयजी ॥४९॥
जल धरावे श्री अंगे सुखद ए । भुषण मोती नी मालजी ॥
सुक्षम भूषण एह समे । राजे तिलक ने भालजी ॥५०॥
एह समे ने सोभा अती घणी । अनुभवी तणां मन जाणेजी ॥
वाहालो धोती उपरेणो राजे । नित्यनी वांणजी ॥५१॥
भोजन् करी बेसे तेह समे । मंदीर छीरक्यॉं ते जलेअजी ॥
ठोर ठोर त्यांहां शीतल कर्या । जल गुलाब संगे भलेअजी ॥५२॥

उत्थापनने समय ते । सीतल पणों नीत्य धरेयजी ॥
मेवो नीलो मीठाई संगे । प्रेम सहीत सहु करेयजी ॥५३॥
श्री मंदीरना चोक मांहां । जल बहु आणी त्यां भरेयजी ॥
बेठा माहाप्रभु आसने । चीत्तवनीये चीत्त हरेअजी ॥५४॥
प्रभु श्री नाहे वेगसु । संध्या समें भर्या नेहजी ॥
गादी तकीयो बीछावीयो । आंगण मांहां आणी तेहजी ॥५५॥
स्वेत साज सोहे घणो । शोभा कहीयन जायजी ॥
प्रभु ने त्यांहां पधरावीआ । गादी तकीया सोहायजी ।५६।
तष्टी गडुआ आगले घरे । माला फुलनी सोहेजी ॥
एह समे शोभा अधिक ए । भक्त रसीक जोई मोहेजी ॥५७॥
कीर्तनीया त्यांहां कीर्तन करे । एह समेना जे रागजी ॥
गाअे सहु ते मघुर स्वरे । सारंगी अनुरागजी ॥५८॥
एह शोभा ते क्यांहां लगी कहु । दीठे ए बनी आवेजी ॥
भोग समरपे ते नीत्य रीते । माहा प्रभु ने जेम भावेजी ॥३९॥
पोहो ठाडे सदा तेणी रीते । बाच्छल्य भाई श्री जाणेजी ॥
तिवारी मां सेज्या अती सोहे । त्यांहां साज ते आणेजी ॥६०॥
चंद्र ज्योति त्यांहां फुली रही । शीतल सुखद छे एहजी ॥
पोढें वाहालो सेज्याए त्यांहां । स्वेत साज सोहे जेहजी ॥६१॥
जले गुलाब छीरके भरी । सेज्या उपर तेहजी ॥
एणी भांते सुखद करी । पधराव्या वाहालो नेहजी ॥६२॥
पोढ़े सुखसुं एरज रीते । उष्ण काले ते एमजी ॥
आदर कोमल तनसुख । ओढ़ावे सेवा रम्यजी ॥६३॥
प्रातः काले जगावोंया । करे ते नीत्यनी बाणजी ॥
वाहलो माहरो आनंद मई । बिराज चतुर सुजाणजी ॥६४॥
आनंद आव्यो उच्छव । विवाह तणो माहा सारजी ॥६५॥
भाई श्री करे छे ए उछव । वरसो वरस तेमजी ॥
भक्त सहु मली एम करे । भाई श्री करे ते जेमजी ॥६६॥
उछाह वाढ्यो ते अती घणो । श्री वल्लभ वर भुपजी ॥
भक्त ने उछाह अंग अंग प्रति । विवाह मंगल रूपजी ॥६७॥
प्रथम करे आरंभ ए । मंगले धोले रसालेजी ॥

साथीया तोरण बांधीयां। आनंदे रस भर्या वालजी ॥६८॥
मंगल गाये सुंदरी मली। कीर्तनीया कर गांनजी।
वाजां वाजे छे अनी घणां। शोभानुं नहीं भानजी ॥६९॥
एणी पेरे होये उछव ; विवाह सुखनुं निधानजी ॥
भक्त रसीक ने ते फुल घणी। ए रसनुं करे पांनजी ॥७०॥
आनंद प्रगट्यो सुंदरी ने। समार्या मंदीर धॉमजी ॥
मंडप वस्त्र रंग रंग घणां। ए जोई सरीयां ने कामजी ॥७१॥
मंगल बहु एणी पेरे कर्या। विवाह ना धर्या साजजी ॥
ए उछव छे रलीयामणो। रलीआमणना माहाराज जी ॥७२॥
भाई श्री नाही ने आवीयां। जगाव्या माहाप्रभु वेगजी ॥
पधराव्या आसन परे। कीधा नीत्यना नेगजी ॥७३॥
मंगल काज कर्या सहु। विवाह उछव आज जी ॥
एह दिवसे फुल अती घणी। श्री वल्लभ माहाराज जी ॥७४॥
तेल्या भंग कर्या प्रेम सुं। नहवराव्या केशर रंगजी ॥
धोती उपरेणो पीत ते। कोर सोनेरी संगजी ॥७५॥
सोंधे भरी ते धरावीयो। भुषण बहु धर्यो चलकेजी ॥
तुलसी माला तिलक धर्या। युग युगी ये मोती ललके जी ॥७६॥
मोती ना हार ने मध्य सोहे। कुंडल मुदीका भ्राजेजी ॥
भुषण बहु धर्या श्री अंगे। वरजी एणी पेरे राजेजी ॥७७॥
सोल वरसना महा प्रभु। विवाह हवो ए उछाहेजी ॥
बहुजी वरस ते आठनाँ। सोभा कहीये न जायेजी ॥७८॥
ते जाणे अनुभवी एह। वचने एह न आवेजी ॥
ए स्वरूप उरमां धरी। भाई श्री करे भर्या भावेजी ॥७९॥
रात्र दिवस एहज रहे। जोडी अवीचले मंनजी ॥
तेणे भावे करे एह। विवाह ओच्छव धन्यजी ॥८०॥
भोग समरपे अनेक त्यां। राज भोग ए रसाले जी ॥
सखडी पकवान बहु करी। समरपे भरी भरी थालेजी ॥८१॥
भोजन करे श्री वल्लभ वर। भोगता रसनु रूपजी ॥
भोजन करे छे ए प्रीत्यमु। श्री गोकुलेश स्वरूपजी ॥८२॥
भाई श्री पछे ते आवीयां। भोग सरावे ते ज्यारेजी ॥

नीत्य ना नैग ते करीयने। पोहोची रहया छे ते ज्यारेजी ॥८३॥
आचमन करी बीड़ा धर्या । अगर उखेव्या सुवासजी ॥
द्वार उघाडयां उछाहसुं । उभा भक्त ते पासजी ॥८४॥
निरखे ए समे सहु मली । गाये मंगल गीतजी ॥
कीर्तनीया ते कीर्तन करे । वीवाहनां पद प्रीतजी ॥८५॥
बाजां बाजे छे अती घणां । मांगल्य शब्द सोहायेजी ॥
श्री वल्लभ वर ए समे। भक्त ने माहा रस आपेजी ॥८६॥
दुलेह नवल ए माहा प्रभु । एहोनो नित्य विवाहजी ॥
तेह करे सहु मली मली । आनंद अंग ना मायेजी ॥८७॥
सुंदरी आव्यां शृंगार धरी। आरती करवा एह समेदजी ॥
श्री मुख जुवे उछाह भर्या। धीर न धरे ते केसेयजी ॥४८॥
धन्यता मान पोना तणी । पाम्यां एह पती आजजी ॥
आरती प्रगट करी लाव्यां। धरीया सघलां ते साजजी ॥८९॥
तिलेक करे ते शोभा जोवे । हार श्री कंठे ते धरेयजी ॥
ईडी पींडी ओवारीने । बीडां आपे श्री करेयजी ॥९०॥
आरती वारे छे प्रभु पर । जे जे कार ते थायेजी ॥
एह समे ते शोभा अती घणी। वचने कहीये न जायेजी ॥९१॥
भाई श्री ने आनंद घणो । नोछावरो आपे वारीजी ॥
गायक गुणीजन सहुअने। एह समे आनंद भारीजी ॥९२॥
एणी पेरे ए उछव । विवाह नो अती सोहेजी ॥
वरजी आपे दान बहु । एणे समे सहु मोहेजी ॥९३॥
भाई श्री ए प्रगट कर्यो । विवाह उछव सारजी ॥
तेणे करी ते जाणीयो । स्वकीयने एहज आधारजी ॥९४॥
श्री चरणार्विद स्थित करी । सेवा एणी पेरे करेयजी ॥
स्वकीय समाज ने अर्थे। ए सेवा माहा सुख भरेयजी ॥९५॥
हवे कहीस जे आगले होसे। ओछव बीजा छे जेहजी ॥
अनुभव पोते सुरत करी। माहा प्रभु सुं करी नेहजी ॥९६॥
नोमो मांगल्य नवरंग कहीसे । जे तेमांहां आवेजी ॥
तेणे करी अनुभव हासें। अंग अंग रस उपजावेजी ॥९७॥
श्री गोकुलेश लीलात्मिक । नित्य नित्य अधीक ते करेयजी ॥

ए स्वरूप माहा रसे भंयुं । भक्त रसीक उर धरेयजी ॥९८॥
एणी पेरे ए माहा प्रभु । राजे श्री गोकुल गांमजी ॥
नित्य नित्य लीला अधीक करे । मेवा सुख अभीरामजी ॥९९॥
परम भक्त गोकुल भाई । ए रसमां भीज्यां तेहजी ॥
ते रसनो मनोरथ । बल्लभदास ने एहजी ॥१००॥
इति श्री मांगल्ये अष्टमुं संपुर्णम ।

॥ मांगल्य नवमुं ॥

श्रीजी ॥ श्री रमणेशो कृपालनी सहाय हजो ॥ श्रीजी ॥ श्री गोकुलेशो श्री वल्लभवर जयति ॥ हवे मांगल्ये नवमुं लखीये छीये। ए गावानी चाले (उ दादाजी कृत्य विनती जे ॥ वेंश्नव जन ने करू वीनती शीरनामी कर जोडीजं गवाशे ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

श्री वल्लभ वर माहा रसीकवर । नित्य नित्य लीला राजे ॥
नख शीख सुंदर क्यांहां लगी कहीये कोटी काम छवी छाजे ॥१॥
एह वीराजे श्री गोकुल मध्य। माहा प्रभु अति रस रास ॥
तेह कहु छु कांई एक आसे । सुणजो प्रभुना दास ॥२॥
श्रावण सुदी द्वादशी उज्याली । पवित्रा उछव एह ॥
भक्त सहु मन आनंद वाध्या । करे मनोरथ तेह ॥३॥
श्री बेठक जलहल करे तेजे । तिवारी सुंदर सोहे ॥
गादी तकीया वीराज्या । दुलीचे मंन मोहे ॥३॥
मखमली अति सुंदर घणुं । लाल हरित रंग रंग ॥
तकीये फुदवां हेमनां ललके । ने उपर जडयां नंग ॥५॥
श्री वल्लभवर बेठा आवी । पवीत्रां उछव आज ॥
धोती उपरणा केसरी रंगीत । सोहे श्री माहा राज ॥६॥
पाघ केसरी लाल श्री मस्तक । बांध सुंदर भ्राजे ॥
सोभा जोवे भक्त रसीक ए। उभा सहु समाजे ॥७॥
पवित्रां श्री कंठे अती सोहे । कनक पाट बहु रग ॥
तुलसी माला तिलक केसरनुं । राजे बेहु मली संग ॥८॥
नख शीख शोभा एणी पेरे राजे । श्री मुख क्रांती अनुप ॥
आपे दान भक्त ने एह समे । श्री वल्लभ वर भूप ॥९॥
पवित्रां उछब सदा महा उछव छे । भक्त रसीक आधार ॥

लेखन करूं अनुभव आणी। थाये अती विस्तार ॥१०॥
आगले कहेसुं जे जे थाये। सेवा तणा प्रकार ॥
भाई करे सेवा श्री चरणे। स्वरूप धरी उर सार ॥११॥
एह समेनी सुरत करीने। करे छे उछव एह ॥
पविता मंमला अती सुखकारी। एह दिवसे बहु नेह ॥१२॥
भाई श्री उठे पाछली राते। नाही ने भीतर आवे ॥
वेगा वेगा काज करीने। माहा प्रभुजी ने जगावे ॥१३॥
पधरावे आसन उपर त्यांहां। करे ते नित्यनां काज ॥
एह समे जे जोईए ते ते। आणी धरे सहु साज ॥१४॥
वीनती करी पधरावे प्रभु ने। तेल गादीए त्यांहां ॥
तेल्या भंग करे श्री अंगे। प्रफुलीत अंग अंग माहा ॥१५॥
एह समे सुरती ओच्छवनी। आवे भरी भरी मन्न ॥
फुलेल लगावै वाच्छल्य करी करी। मनोरथ एहोना धन्य ॥१६॥
पछें पधरावे चोकी उपर। माहा प्रभु ने उछाहे ॥
नहवरावे केशर रस लेई। श्री अंग सोहाय ॥१७॥
एणी पेरे मांगल्य बहु बहु करी। नहवराव्या श्री नाथ ॥
एह समे त्यांहां आवीं नीरखे। भक्त सुजाती साथ ॥१८॥
अंग अंगोछी फरी लगावे। तेल सुखद श्री अंग ॥
आसने पधराव्या वेगे। प्रभु जी बेठा रंग ॥१९॥
धोती लाल भरी अती सोंधे। पेहेरावी रूची करीय ॥
ते उपर भूषण पहेराव्यां। मुद्रीका कुंडल धरीय ॥२०॥
चोकी मध्य हीरा बहु चलके। माणेक पन्ना संग ॥
श्री कंठ धरावी प्रेमे। सांकलीए मन रंग ॥२१॥
मोती तणा हार बहु धरीया। हेम जडाव अपार ॥
भुषण पेहेराव्यां बहु अंगे। तिलक भाल अतिसार ॥२२॥
उपरेणो छे कसबी कोरे। सोहे रंगीन लाल ॥
सोंधे मेद भर्यो बहु सोहे। सोभा अतिय रसाल ॥२३॥
तेह ओढाव्यो श्री अंग उपर। झलके क्रांती अनूप ॥
माहा प्रभु बेठा आसन राजे। रस भर्यु सुंदर स्वरूप ॥२४॥
भाई श्री करे एणी पेरे। सहु सेवा तणा प्रकार ॥

भोग समरायो वेगे करी त्यांहां । आरोगे प्राण आधार ॥२५॥
सेज्या घरमां आवी बेठा । करवा त्यांहा काज ॥
बिछावी दुलीचो गादी धरी । त्यांहां आणी सघालो साज ॥२६॥
छोटो मोटो तकीयो मुक्यो । मकमलो कोमल लाल ॥
धोती उपरेणो ते धरीयो । केसरी परम रसाल ॥२७॥
पाघ कसुंबी लाल महीन ते । इच्छाए ते धरावे ॥
धर्या साज सहु त्यांहां एणी पेरे ॥ गादी तकीये सोहावे ॥२८॥
माहा प्रभु ए अंगी करीयो । ईच्छा ए करी एह ॥
ए जोई सहु न सुरत होए छे । अनुभवी ने मन्न तेह ॥२९॥
भाई श्री वेगा भोग सरावी । बीडा धरीयां सार ॥
समे लह्यो पवित्रो केरो । धरावत्रा आधार ॥३०॥
धर्या पवित्रां थालो मांहे । आणी राख्यां पास ॥
भाई श्री त्यांहां आवी बेठा । अंग अंग अती हुल्लास ॥३१॥
गुणी जन गाये एह समे बहु । पवित्रांनां पद तेह ॥
श्री बल्लभवर सुणे ते रुचीसुं । उपजावे माहा नेह ॥३२॥
वाजां बाजे ताल झांझ संग । मृदंग मधुर वाये ॥
गाये सहु मली एक भावे । प्रभु ने जे सोहाये ॥३३॥
साथीया तोरण मंगल एह समे । कर्या ने विविध प्रकार ॥
पवित्रां ओछव परम मंगल छे । भक्त ने माहा सुख सार ॥३४॥
साथ सहु त्यांहां आवी मलीयो । छोटो मोटो जेह ॥
वस्त्र भुपण पेहेरे अति सोहे । नीकट उभां छे तेह ॥३५॥
एह समे सोभा श्री मुखनी । जुवे भक्त रसाल ॥
पवीत्रां ऊछव आनंद दाता । बेठा वल्लभ राज ॥३७॥
भाई श्री त्यांहां तिलक करे छे । कुंकुनु अक्षत भाल ॥
पवित्रां पहेरावे श्री कंठे । कनक पाटनी माल ॥३७॥
पवीत्रां रेसम बहु रंग रंगना । लाल श्याम सेत सोहे ॥
पीत हरित सोवर्ण बांध्या । ए जोई मन त्यांहाँ मोहे ॥३८॥
ए पहेराव्यां श्री कठे सहु । फुल माल मध्य राजे ॥
ए समे वीडां धर्या हस्ते । माहा प्रभु सुंदर भ्राजे ॥३९॥
भाई श्री त्यांहां मन करीने । श्री चरणे धरे माथ ॥

स्वरूप प्रभुनु उरमां रमी रह्यु । सरवस एहज नाथ ॥४०॥
एणी पेरे पवीत्रां धरीयां । शोभा कहीय न जाये ॥
खांड पापडी भोग समर्पे । आरोगे प्रभु मन भाये ॥४१॥
ए ओच्छवनो एह भोग छे । सर्वो पर माहा सार ॥
समरपे थालो मां भरी भरी । भोग तणों नही पार ॥४२॥
राज भोग समर्पे नेहे । सखडी सामग्रो बहुअ ॥
ओच्छवना जे प्रकार होये छे । घरे आणी आणी सहुअ ॥४३॥
भोजन करे वाहालोजी सुखसु । बेठा नित्यनो त्रांण ॥
भोगता ए श्री वल्लभ वरजी । आरोगे चतुर सुजाण ॥४४॥
एहज रीते घडी चार ते । वीते भोजन करता ॥
नित्य चरीत्रमां लख्यु विस्तारे । लेहेजो उलेट भरतां ॥४५॥
भोग सरावी द्वार उघाडयां । निरखे सहु मली साथ ॥
आसन सुंदर उपर बेठा । पेहेरे पवित्रां नाथ ॥४६॥
तेह समे त्यांहां साथ सहुको । प्रभुनी पासे आंव्यां ॥
पेहेरावे श्री कंठे पवीत्रां । वाहालाने मंन भाव्यां ॥४७॥
नाहनां मोटां सहुको आवी । पवीत्रां पहेरावे ॥
गादी तकीये माहा प्रभु राजे । प्रीत घणी उपजावे ॥४८॥
सुंदरी सहु मली आरती करे । तेह वारे आपोपां तन्न ॥
तीलेक करी श्री चरणे नमतां । माने पोताने धन्य ॥४९॥
एणी भांत्य पवीत्रां ओच्छव । भाई श्री करे सुख सार ॥
सदा सर्वदा एहज रीत ॥ जीवन प्राण आधार ॥५०॥
कीर्तनीया सहु गान करे छे । तेने आप्यां दांन ॥
वागा वस्त्र विविध प्रकारे । कीधां बहु सन्मान ॥५१॥
भाई श्री करे सुरत उर आणी । अनुभव पोता केरो ॥
श्री चरणार्विद करे सेवा । भाव छे एहोना अनेरो ॥५२॥
भादरवां वदीमां षट्ट दिवस । बेसे हींडोले नाथ ॥
उत्थापन ने समे अती शोभा । निरखे सहु मली साथ ॥५३॥
एह दीवसे आप्यु छे दान ते । भक्त ना मनोरथ करीये ॥
तेह करे सहु ए दीवस नही । भगवदी उलट भरीय ॥५४॥
भाद्र पक्षे जन्माष्टमी थाये । ओच्छव परमानंद ॥

माहा प्रभु ने ए दिवस उछात। प्रगटे आनंद कदं ॥५५॥
एह दिवस प्रागट नो जाणी। प्रभु करे उछाह ॥
स्वकीय ने अर्थे प्रगट कर्यो ए। अंग अंग मांहे उमात ॥५६॥
माहा प्रभु पोते नित करीने। देखाडे निज साथ ॥
भक्त सहु ए एणी पेरे करवु। प्रागट दिन्न प्राणनाथ ॥५७॥
प्रभुनुं प्रागट अदभुत जाणो॥ करवुं सहु ए तेम ॥
ते माटे देखाडयु वाहाले। उछाह करो सहु एम।॥५८॥
एह थकी जाण्युं छे सहु ए। प्रागट प्रभ नुं सार ॥
जन्म दिवस आवे ठे ज्यारे। भक्त ने मोद अपार ॥५९॥
एह लही करे भाई श्री उछव। जन्माष्टमी नो दीन्न ॥
केसरे न्हवरावे वाहालाने। आनंद उपज्यो मन्न ॥६०॥
केशरी धोती उपरेणो संग। भुषण अनेक धरावे ॥
राजभोग समरपे रीते। वाच्छल्य एह सुहावे ॥६१॥
उत्थापन थाये नीत्य रीते। सेवा नणा प्रकार ॥
रात्र संपूरण जाग्रत होये। बेठा रहे आधार ॥६२॥
मध्य रात्रे लही जनम समेनो। भोग समरपे एह ॥
फलाहार अनेक प्रकारे करी करी। पकवांन संगे जेह ॥६३॥
माहाप्रभु आरोगे सकल सामग्री। ए ओच्छवे ए रीते ॥
नोमी ने दीवसे भोजन करे छे। प्रातः काले ते प्रीते ॥६४॥
आश्वीन सुदी विजय दसमी आवी। प्रभु ने आनंद एह ॥
केसर रस न्हाये ए दीवसे। भक्तने उपज्यो नेह ॥६५॥
स्वेत धोती उपरेणो श्री अंगे। धर्या अदभुत सोहे ॥
हीरा माणेक जडयां भुषण। मुक्ता हार मन मंहे ॥६६॥
तुलसी गुंजा माल श्रीकंठे। भुषण नो नही पार ॥
तिलक भाल केशरी अती राजे। बीराजे प्राण आधार ॥६७॥
एणी भांते राजे माहाप्रभु। विजय दसमी दीन्न ॥
भोग राग रस विविध प्रकारे। होये सहु संपन्न ॥६८॥
उत्थापन ने समे ते लावे। अश्व सभारी पास ॥
ते शोभा जोतां वणी आवे। वाधे अती हुल्लास ॥६९॥
रात्र घडी बे चार वीते। समरपे भोग रसाल ॥
दुध पौवा आदे अनेक। सामग्री आरोगे श्री वल्लभ लाल ॥७०॥
भक्त सहु त्यांहां आवी नीरखे। वाहालाजी नुं रूप ॥
आरती लाव्या प्रगट करीने। सुंदरी सुंदर रूप ॥७१॥
तिलक करीने धरे जवारा। श्री मस्तके तेणी वार ॥
आरती ओवारे श्री मुख पर। चाले रसनी धार ॥७२॥

फूलना हार श्री कंठे सोहे ॥ शोभा तणो नही पार ॥
स्वेत साज सहु जल हल राजे ॥ अनुभवी जाणे सार ॥७३॥
ओच्छव एहज रीते थाये ॥ विजय दसमीनो एह ॥
अनुभवी लेहेसे सुणी बीस्तारे ॥ जाणसे मनमां तेह ॥७४॥
कारतीक वदी रूप चौदस कहीये ॥ ओच्छव सुख रूप ॥
केसरे न्हाये वाहालो सहवारे ॥ परम ओच्छव ए अनूप ॥७५॥
केसरी धोती उपरेणो संग ॥ केसरी तीलक ते भाल ॥
भूषण तुलसी माल श्री कंठे ॥ सोहीये परम रसाल ॥७६॥
राजभोग होए ओच्छव रीते ॥ सामग्री ते आपार ॥
भोजन करे प्रभु माहा प्रसन्न थई ॥ भक्त तणो आधार ॥७७॥
एणी भांते दिवाली ने दिन ॥ ओच्छव होए एह ॥
श्री गोकुलेश्वर आसन पर राजे ॥ भक्त ते भरीया नेह ॥७८॥
संध्या समे दीपक बहु सोहे ॥ जल हल करे त्यांहां तेज ॥
धोती उपरेणा सहीत बीराजे ॥ भर्या स्वकीय ने नेहे हेजा ॥७९॥
माहा रस भोक्ता श्री वल्लभ वर ॥ भोग राग संजोग ॥
सदा सर्वदा एणी पेरे ॥ करे स्वकीयसु भोग ॥८०॥
कार्तीक सुदी पडवे ते । अन्नकूट थाये ए ते सहु जाणे ॥
माहा प्रभु करे भोजन संध्या ए ॥ ओच्छव एह प्रमाणे ॥८१॥
कार्तीक सुदी एकादशी आवे ॥ प्रबोदनी जाग्रण ॥
आरोगे भोग संध्या ए फलहार नो ॥ भक्त तणु आभर्ण ॥८२॥
दीपक होय एणे समे त्यांहां ॥ फल धरवाना नेग ॥
समर्पे छे ए दीवसे ॥ सहु सामग्री करी भेग ॥८३॥
ए रीते ए दीवस सहु आवे ॥ ओच्छव करी करी कहीये ॥
ओच्छव एकज माहा प्रभु नो ॥ ए बिना बीजु नव लहीये ॥८४॥
स्वकीय ने सर वस श्री ओच्छव छे ॥ प्रागट प्रभु नु एह ॥
महेद कृपा तणे बल श्री जाण्यु ॥ जाण जो स्वकीय तमो तेह ॥८५॥
ए ओच्छव ए सेवा सुख निधी ॥ प्रगट करो सन भाये ॥
श्री गोकुल भाईये परमानंद भरी ॥ कीधी प्रभु ईच्छाये ॥८६॥
स्वकीय ने अर्थे करावी सेवा ॥ जाणवा सहु ने धर्म ॥
एहज रीते करवु सहु ए ॥ अनन्यता नो मर्म ॥८७॥

एटला माटे स्थीत कीधी छे ॥ ए गोकुल भाई भक्त ॥
गोकुल भाई ने साधन नोहोनुं ॥ प्रभु सुं सदा ए अनुरक्त ॥८८॥
ए तो प्रगटीत सदा श्रष्टि छे ॥ श्री अगवद ए अनुप ॥
श्री गोकुलेश्वर माहा रसीक ए॥ भक्त रसीक रस रूप ॥८९॥
ए स्वरूप जे एणे भावे ॥ जाणे छे नीज श्रष्टि ॥
तेहने सहु को कहे छे भरूची ॥ माहा प्रभु करे रस वृष्टि ॥९०॥
तेहज जाणसे ए लेखन नो ॥ अलौकीक अदभुत आसे ॥
अनन्यतानुं स्वरूप लख्युं छे ॥ उछाहे वल्लभदासे ॥९१॥
गोपाल दास व्याराना कहीये ॥ परम भगवदी सार ॥
प्रभु सुं सदा ए रस माहां भीना ॥ मनोरथ रसनो अपार ॥९२॥
एहो तणे ए मनोरथे प्रगटयो ॥ नव रस ग्रंथ ए नाम ॥
जीनी जमुनादास भगवदी ॥ मनोरथ ए अभिराम ॥९३॥
एहोना मनोरथ थी रस प्रगटयो ॥ सेवा श्री चरणे अनुप ॥
गोकुल भाई ए कीधी ते कहो ॥ उर धरी प्रभु नुं रूप ॥९४॥
एह प्रभु रसीक शीरोमणी रस मैई ॥ अहरनीस रस भर्या राजे ॥
रस भर्या भक्त छे एहज भावे ॥ ते मध्य प्रभु जो वीराजे ॥९५॥
नारायणजी दादा भक्त कहीये ॥ तेने आप्यां दांन ॥
तेह तणुं फल प्रगट हवुं छे ॥ जाण्यां सुखनुं निधांन ॥९६॥
त्रीकम भाई पुत्र एहोना ॥ परम रस भर्या एह ॥
माहा प्रभु सुं सदा एहज भावे ॥ भीनां रस मांहां तेह ॥९७॥
एहोना पुत्र मोहन भाई अद्‌भूत ॥ श्री अंग एवुं नाम ॥९८॥
एहोने संगे में एज जाण्युं ॥ स्वरूप रसीक वरेश ॥
माहारे ए स्वरूप सर्वस्व छे ॥ रस भर्या श्री गोकुलेश ॥९९॥
वल्लभ दास ने मनोरथ एहज ॥ मांगे विनती करीय ॥
प्रभु समाज मां भक्त रसीक संग ॥ आपो उलट भरीय ॥१००॥

॥ इति श्री नवमुं मांगल्य संपुर्णम् ॥

नवरस ग्रंथ संपुर्ण ॥ संवत १९९६ ना फागण वदी–३ ने मंगलवार ली. दादा हीमतलाल माणेकलाल ना विनय पुर्वक जे जे श्री ॥